।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।। – आर्यसमाज का पहला नियम

वर्ष ३१, अंक १८ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार २८ अप्रैल, २००८ से ४ मई, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०६ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की आयोजन समिति की दो दिवसीय बैठक सम्पन्न

125वें वर्ष के लिए बनाए गए कार्यक्रमों का एजेण्डा पूर्ण विचारोपरान्त स्वीकृत

भिनाय कोठी का पुनरुद्धार एवं भव्य स्मारक का रूप देने का कार्य सम्पन्न होगा : कै० देवरत्न आर्य

आज सारे संसार को महर्षि दयानन्द जी के सन्देशों की सबसे अधिक आवश्यकता : महाशय धर्मपाल

दो दिन तक चले इस विशेष अधिवेशन में वैदिक विद्वानों के रूप में आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ० सुरेन्द्र कुमार, स्वामी सम्पूर्णानन्द, प्रो० ओम कुमार, आचार्य सत्यानन्द, श्री आर्यबन्धु (गुजरात), आचार्य जैमिनी, उपस्थित थे तथा मुख्य अधिकारियों के रूप में गुजरात सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, टंकारा ट्रस्ट से श्री अजय सहगल तथा दिल्ली सभा की ओर से सर्वश्री सोमदत्त महाजन, ओम प्रकाश आर्य, सुखबीर सिंह आर्य, शिवकुमार मदान, राजीव आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, अरुण प्रकाश वर्मा, कीर्ति शर्मा, भजन प्रकाश आर्य, सुशील महाजन, सुरेन्द्र आर्य, आदि अधिकारी गण मुख्य रूप से उपस्थित थे।

२६ अगस्त, २००८ से होगी भव्य कार्यक्रमों की शुरुआत सवा वर्ष तक सारे देश-विदेशों मे चलाए जाएंगे अनेक रचनात्मक कार्यक्रम

घर-घर तक महर्षि दयानन्द जी के चित्र, चरित्र एवं सिद्धान्तों को पहुंचाना होगा मुख्य लक्ष्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचार आज सारे संसार में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं। संसार मे प्रत्येक मनुष्य शान्ति की खोज में घूम रहा है परन्तु ऐसे विचारों से वह पूर्णतः अनभिज्ञ है कि किन सिद्धान्तों पर चलकर वह शान्ति को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि वह महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाए। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि जो योजना इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में बनाई गई है, वह योजना इस उद्देश्य को निश्चित रूप से पूर्ण करेगी। हम सबको पूर्ण परिश्रम से लगकर इस

सभा के उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी, श्री वाचोनिध आर्य (गांधीधाम), जम्मू–कश्मीर सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री भारतभूषण गुप्ता जी एवं मन्त्री श्री रविकान्त जी, बिहार सभा के मन्त्री श्री रमेन्द्र गुप्त जी, मध्य भारत सभा के प्रधान श्री दलबीर सिह राघव, राजस्थान सथा के मन्त्री श्री अमरसिंह जी, छत्तीसगढ़ सभा के प्रधान श्री दया सागर जी, एवं उनके अन्तरंग सदस्य, हरयाणा

प्रचार प्रसार एवं पहचान की दष्टि से महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक चित्र स्वीकत

सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, मन्त्री आचार्य विजय पालजी, एवं अन्य अधिकारी गण, पश्चिम बंगाल सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, मन्त्री श्री दीनदयाल गुप्त, झारखण्ड सभा के मन्त्री श्री भारतभूषण त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश से श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, श्री सत्यानन्द आर्य, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका स्वामी उत्तमा यति जी, विमला मलिक, आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की श्रीमती विभा आर्य, श्रीमती वीणा आर्या, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि

पूरे अभियान में "महर्षि दयानन्द सरस्वती" नाम का ही होगा प्रयोग

समिति की बैठक को सम्बोधित करते आयोजन समिति अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य, हरयाणा सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं आचार्य विजयपाल जी।

सत्यार्थ प्रकाश का एक-एक शब्द माला के मोती के समान, एक भी मोती निकालने का हक किसी को नहीं : डॉ० रामप्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द जी की वह कालजयी कति है जिसको पढ़कर न जाने कितने मनुष्यों का जीवन परिवर्तित हो गया तथा इस देश में फैले पाखण्ड, अंधविश्वास एवं कुरुतियों को जितनी चोट इस ग्रन्थ के माध्यम से पहुंची, शायद उसका सानी और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की इस कति में उनके उद्देश्य को समझने के लिए भूमिका को पढ़ा जाना अत्यन्त आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा एक–एक शब्द एक–एक मोती के समान है। जिस प्रकार से एक भी मोती को यदि माला से तोड़ लिया जाए जो जैसी स्थिति माला की होती है ऐसी ही स्थिति इसकी होगी। इसके एक भी मोती को तोड़ने का अधिकार किसी को नहीं है। वर्तमान में जो सत्यार्थ प्रकाश पर कुछ भ्रमित लोगों ने मुकदमा किया है, उसके लिए हम सब को एक जुट होकर लड़ना होगा।

– शेष पष्ठ १२ पर

योजना की पूर्ति के लिए पूर्ण निष्ठा से कार्य करना होगा। उक्त विचार महर्षि दयानन्द के निर्वाण के १२५वें वर्ष के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से बनाई गई समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने इस प्रस्तावित कार्यक्रमों को स्वीकत करने के लिए आमन्त्रित की गई मुख्य समिति की बैठक में व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार से इस योजना को तैयार किया गया है उससे ऐसा

मुख्य चुनौती उन व्यक्तियों तक पहुंचने की, जिनके पास हम आज तक नहीं पहुंच सके

जरुर लगता है कि आर्यसमाज मे पुनः जागति का सागर लहरा रहा है। उन्होंने अपनी ओर से इस योजना को पूर्ण करने में हर प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन उपस्थित आर्यजनों को दिया।

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी ने की। बैठक २६ अप्रैल की प्रातः ११ बजे से रात्रि ८.३० बजे तक चली तथा २७ अप्रैल को पुनः ११.३० बजे से सायं ५.३० बजे तक चलती रही। बैठक में इस पूरे एजेण्डों को जो कि ५० पन्नों का था विस्तार से प्रस्तुत किया गया।

– शेष पष्ठ २ पर

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

पहला नियम

।। सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।।

— प्रो० रत्नसिंह

गतांक से आगे :-

इस मत के खण्डन में महर्षि का कथन है कि– ***"जो तुम्हारे कहने के अनुसार जगत् का उपादानकारण ब्रह्म होवे तो वह परिणामी, अवस्थांतर युक्त, विकारी हो जावे और उपादानकारण के गुण-कर्म-स्वभाव कार्य में भी आते हैं।"*** ब्रह्म चेतन है, इसलिए पथिव्यादि कार्य भी चेतन होने चाहिए, किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। इसका कारण यही है कि ईश्वर जगत् का केवल निमित्तकारण है, उपादानकारण नहीं। इस आधार पर प्रस्तुत नियम में आदिमूल का अर्थ निमित्तकारण ही हुआ। अतः इस नियम का भाव इस नियम से आर्यसमाज के दो मौलिक सिद्धान्तों की जानकारी मिलती है– (१) वेद अपौरूषेय हैं, (२) परमेश्वर जगत् का निमित्तकारण है। इसमें यह भी अंतर्निहित है कि यह जगत् सत्य है, मिथ्या नहीं और नवीन वेदान्तियों का ब्रह्मवाद का सिद्धान्त असत्य है। इसके साथ ही इस नियम में भौतिकवाद के इस मत का भी खण्डन हो जाता है कि जगत् बिना किसी चेतन सत्ता की सहायता के प्रकति से स्वयं उत्पन्न हो जाता है। इन तीनों सिद्धान्तों का विवेचन करना यहाँ संभव न हो सकेगा, तथापि प्रथम सिद्धांत –"वेद अपौरूषेय हैं," का संक्षेपतः वर्णन करना आवश्यक एवं उपयुक्त प्रतीत होता है।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है।

आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद ईश्वर द्वारा प्रदत्त वह सर्वप्रथम ज्ञान है, जो मनुष्यों को सष्टि–उत्पत्ति के साथ दिया गया था। यह मान्यता केवल शब्दप्रमाण पर ही आधारित नहीं है, वरन् तर्कसंगत भी है। वेद की अपौरूषेयता पर विचार करते समय हमारे सामने एक प्रश्न उपस्थित होता है, जिसपर विचार करना आवश्यक है। वह यह है कि विभिन्न मतावलम्बी सभी लोग अपने–अपने धर्मग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। ऐसी अवस्था में किसको ईश्वरीय ज्ञान माना जाए और किसको नहीं? इसके उत्तर में हम यही कह सकते हैं कि सब मतों के दावों को कसौटी पर कसकर देख लो, जो उस पर खरा उतर जाए वही ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है। यहां कतिपय कसौटियां प्रस्तुत की जाती हैं–

१. ईश्वरीय ज्ञान मानवसष्टि के साथ ही सष्टि के आरम्भ में मिलना चाहिए।

२. ईश्वरीय ज्ञान किसी देश विशेष की भाषा में न हो।

३. ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ में किसी देश का भूगोल व इतिहास नहीं होना चाहिए।

४. उसमें कोई भी बात सष्टिक्रम के विपरीत न हो।

५. वह ज्ञान ईश्वर के गुण–कर्म और स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए।

६. मानव के पूर्ण कल्याण के लिए जितना ज्ञान अपेक्षित है, वह उस ग्रन्थ में होना चाहिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन कसौटियों पर केवल वेद ही खरा उतरता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के हदय में किया था। आर्यसमाज का दावा है कि वेद में न इतिहास है और न उसमें कोई सष्टिक्रम के विरूद्ध बात है। वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के सम्बन्ध में कई शंकाए प्रस्तुत की जाती हैं। उन सबका महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय प्रकरण के साथ तर्कसंगत समाधान किया है।

इस नियम की एक दूसरी व्याख्या

कुछ विद्वानों ने इस नियम की एक भिन्न व्याख्या की है, उस पर भी विचार कर लेना चाहिए। उनके विचार में अन्वय करने के उपरान्त इस नियम का रूप यह होगा– ***"जो सब सत्यविद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"***

क्रमशः
आर्यसमाज के नियम व्याख्या

प्रथम पृष्ठ का शेष

125वें वर्ष .....

किया जाना आवश्यक है। सभी ने यह भी निश्चय किया कि इस कार्यक्रम को भव्य बनाने मे सभी को प्रयत्न करना चाहिए।

टीवी, अखबार, मैग्जीन्स, लेख, विद्यालय, आर्यसमाज, आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल,गुरुकुल एवं अन्य संस्थाओं के माध्यम से संचालित होंगी योजनाएं

एक-एक विषय पर सभी सदस्यों ने गम्भीरता पूर्वक चिन्तन–मनन किया एवं संशोधन हेतु आवश्यक सुझाव भी दिए। योजना के प्रत्येक बिन्दु को इस दष्टि से विचार किया गया कि क्या यह बिन्दु क्रियान्वयन होने योग्य हैं या नहीं। इस योजना का क्रियान्वयन ही इसकी सफलता होगी। अतएव प्रत्येक सदस्य ने इसके सम्बन्ध में अपने विचार लिखित में भी दिए। एजेण्डे के अतिरिक्त भी कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए जिनको इस योजना में स्थान दिया जाएगा। योजना के उद्देश्य, उसको पूरा करने के लिए लक्ष्य, उसको क्रियान्वित करने के साधन तथा योजना को पूर्ण करने का समयबद्ध कार्यक्रम पहले से तैयार करके प्रस्तावित किया गया था, जिसके कारण से सभी सदस्यों को इसमें विचार करने में सरलता हुई। २६ तारीख के रात्रिकालीन सत्र में विशेष रूप से अजमेर में आयोजित होने वाले कार्यक्रम पर चर्चा हुई जिसमें विस्तत चर्चा उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि परोपकारीणी सभा की ओर से जो कार्यक्रम तैयार किया जाएगा उसमें सब लोग दल–बल सहित उपस्थित होंगे। विशेष रूप से परोपकारिणी सभा के उपस्थित अधिकारियों को सभी प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने आर्यजनों की भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस आयोजन में दीपावली के दिन (निर्वाण दिवस) को सम्मिलित

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १२५वें निर्वाण वर्ष की आयोजन समिति की दिनांक २६,२७ अप्रैल, ०८ को आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में वहद् बैठक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर लिया गया चित्र। उपस्थित सदस्यों को सम्बोधित करते हुए डॉ० रामप्रकाश साथ में हैं श्री विनय आर्य, श्री आनन्द कुमार आर्य, श्री प्रकाश आर्य एवं श्री अजय सहगल। श्री राजेन्द्र कुमार ने भी सभा को सम्बोधित किया।

बैठक में जम्मू–कश्मीर सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्री भारतभूषण गुप्ता एवं मन्त्री श्री रविकान्त जी का सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने पुष्पमाला द्वारा अभिनन्दन किया। बैठक में श्री राजेन्द्र कुमार जी का सबकी ओर से पुष्पमाला द्वारा स्वागत किया गया जिनका मार्गदर्शन इस योजना में विशेष रूप से मिल रहा है।

सभा की अध्यक्षता कर रहे कै० देवरत्न आर्य जी ने उस स्थल **"भिनाय कोठी"** की ओर ध्यान दिलाया जहां पर महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। उसको आज भव्य रूप दिया जाना चाहिए। यदि हम सब मिलकर उस स्थान को एक भव्य रूप दे दें तो आने वाली पीढ़ी उस स्थान पर जाकर अपनी श्रद्धांजलि भी दे सकेगी और उनके सिद्धान्तों को जानने का प्रयत्न करेगी। इस कार्ययोजना को भी इस योजना में जोड़ने का प्रस्ताव रखा गया जिस विचारोपरान्त सर्वसम्मति से स्वीकत किया गया।

सभी सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि प्रचार अभियान मे महर्षि दयानन्द के एक ही चित्र को प्रदर्शित किया जाए। इसके लिए अनेक चित्रों को प्रस्तुत किया गया। तथा विस्तत चर्चा उपरान्त एक चित्र को (जबलपुर में खींचे गए) ही प्रचार हेतु मान्यता प्रदान की गई। जो चित्र लोगो पर तथा आर्यसन्देश के मुख

– जारी पष्ठ १२ पर

त्रैतवाद ही यथार्थ वैज्ञानिक दर्शन है

— मुनि डॉ० योगेन्द्र कुमार

जिस दार्शनिक विचारधारा में ईश्वर, जीवात्मा और प्रकति इन तीनों तत्त्वों को अनादि स्वीकार किया जाता है तथा ये तीनों तत्त्व अपनी–अपनी विशिष्टता के कारण परस्पर भिन्न तथा देश और काल से कभी–भी भिन्न न रहने वाले माने जाते हैं उसे त्रैतवाद कहते हें।

चारों वेदों में तथा सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों, महाभारत, गीता, पुराण, मनुस्मति में, छः दर्शनों में –सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त में त्रैतवाद का अर्थात् ईश्वर जीवात्मा एवं प्रकति के अनादित्य का विस्तार से वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में तीनों तत्त्वों का अस्तित्व विद्यमान है। वहाँ लिखा है कि प्रलयावस्था में (तदेकम) वह ईश्वर एक था (स्वधा) प्रकति (तमस) प्रकति भी थी और (रेतोधा आसन) जीवात्मा भी थे। ये तीनों ही तत्त्व अनादिरूप में विद्यमान थे। जब प्रलयावस्था से जगत का निर्माण होता है, तब ईश्वर इसके निर्माण में निमित्तकारण बनता है अर्थात् निर्माता हो। इस संसार रूपी घोंसले को वह परमाणु– रूपी तिनकों से बनाता है, जो कि जड़ होते हुए भी इस जगत् के उपादान कारण हैं। चेतन परमेश्वर निमित्त कारण है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में कहा है ***''यथावतथ्येता र्थान व्यद्दधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः''*** अर्थात् वह परमेश्वर यथार्थ रूप में इस जगत को शाश्वत रहने वाली जीवात्माओं के लिए बनता है। बुद्धि में प्रविष्ट होकर चिन्तन के द्वारा ज्ञान नेत्र से जब इस प्रकार देखते हैं, तब यह सम्पूर्ण विश्व एक नीड के समान दिखाई देने लगता है। इस उपमा में त्रैतवाद का अर्थात् ईश्वर जीवात्मा और प्रकति का यथार्थ वैज्ञानिक वर्णन है।

भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों के आस्तिक, नास्तिक, सगुण, निर्गुण, भेद किये जा सकते हैं। चार्वाक, जैन, बौद्ध, दर्शन सष्टिकर्ता परमेश्वर को नहीं मानते। चार्वाक दर्शन केवल भौतिकवादी दर्शन है। इसमें न तो ईश्वर नाम की कोई सत्ता स्वीकार की जाती है और न चेतन नामक कोई नित्य अनादि जीवात्मा की यह सष्टि किसने बनाई क्यों बनाई इसका उत्तर इस दर्शन के पास नहीं है। जैन दर्शन में जीवात्मा को भी परिणामी तथा छोटा–बड़ा हर प्रकार का माना गया है। ये तीर्थंकरों की मूर्ति बनाकर पूजते हैं। त्रैतवाद में जीवात्मा अपरिणामी तथा (अणु) सूक्ष्म रूप है। वह नित्य और अनादि है। त्रैतवाद में परमेश्वर निमित्तकारण है तथा परमाणु उपादान कारण है। जैनियों की तरह जीवात्मा स्वयं कर्म कर्ता और स्वयं फल प्राप्त करने वाला नहीं है। ऐसा मानने पर कोई भी जीवात्मा पाप के बदले में दुःख रूपी फल को प्राप्त करने की इच्छा नहीं करेगा। न इससे व्यावहारिक व्यवस्था चलेगी। बौद्ध दर्शन में ईश्वर को स्वीकार नहीं किया जाता। जीवात्मा को नित्य नहीं माना जाता। त्रैतवाद में ईश्वर को सष्टि का निमित्त कारण माना जाता है। यह जड़ सष्टि स्वयं इतनी व्यवस्थित होकर नहीं बन गई, इसको व्यवस्थित करने वाला कोई है।

निहितं गुहा सत् यंत्र विश्वं भवत्येक नीड़म) में सम्पूर्ण विश्व को एक नीड (घोंसले) की उपमा दी। वेद की यह उपमा कितनी सार्थक और यथार्थ है। एक घोंसले को बनाने के लिए सबसे पहले नर और मादा के रूप में पिता और जननी माता की आवश्यकता होती है। चेतन तत्व के बिना घोंसला नहीं बन सकता। चेतन तत्व निमित्तकारण है तथा जड़ तत्व उपादान कारण है। तीसरा प्रश्न उठता है कि घोंसला किस उद्देश्य के लिए बनाया। जिसका उत्तर है अपने बच्चों के लिए बनाया। ज्ञान की दष्टि से देखेगो तो–

''विश्व भवत्येक नीडम्'' यह वेद वाक्य समझ में आ जायेगा। विश्व की रचना करने वाला भी चेतन तत्व परमात्मा है। वह परमात्मा हमारा पालन करने के कारण पिता है तथा शरीर को जन्म देने के कारण जननी माता भी है। ***स नो बन्धुर्जनिता''*** यहाँ उसे ''जनिता'' अर्थात् जन्म देने वाला कहा है। सष्टि के आदि में जब अमैथुनी

— **शेष पष्ठ ६ पर**

और प्रकति उपादान कारण बनती है तथा जीवात्मा पुण्या–पुण्य कर्मो का कर्ता तथा सुख–दुःख रूप में फल का भोक्ता बनता है। ***''भोक्ता भोग्यं प्ररितारंच मत्वासर्व प्रोक्तंय त्रिविधिं ब्रह्ममेतत्''*** (श्वेता श्वतरोपनिषद्) में इन तीनों को भोक्ता जीवात्मा, भोग्य प्रकति तथा प्रेरक परमेश्वर के रूप में वर्णित किया गया है। तीनों ही महान् हैं।

यजुर्वेद के मंत्र ***(वेनस्तत्पश्चय्*** सष्टि होती है उस समय वह परमेश्वर ही ''जनिता'' बनता है। कर्मानुसार अब भी मत्यु के बाद नया शरीर देने के कारण तथा शरीर का निर्माण करने के कारण वह ''जनिता'' है। वही परमेश्वर पिता भी है और माता भी है।

वेद के मंत्र में कहा है :–

त्वं हि नः पितात्वंमाता शतक्रेता वभूविथ अघाते सुम्नमीम है''

हे परमेश्वर' तुम्ही हमारे पिता अर्थात् पालक हो और तुम्हीं माता

बोध कथा

वली देखने को भी इनसाँ नहीं है !

– महात्मा आनन्द स्वामी

एक था फकीर। दिन के समय हाथों में दो मशालें लेकर बाजार में चला जाता था। एक–एक दुकान के सामने ठहरता। ठहरने के पश्चात् चल पड़ता।

एक व्यक्ति ने पूछा – "बाबा ! तुम यह दिन के समय मशालें लेकर क्या देखते–फिरते हो? क्या ढूंढ़ते हो?"

फकीर ने कहा – "बच्चा ! मैं मनुष्य खोज रहा हूं।"

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा– "इतनी भीड़ में, इतने लोगों में तुम्हें कोई मनुष्य नहीं मिला?"

फकीर बोला – "नहीं बच्चे! मुझे कोई नहीं मिला।",

पूछने वाले ने कहा – "तुम मनुष्य किसे कहते हो?"

फकीर ने उत्तर दिया – "जिसमें काम की वासना और क्रोध की आग नहीं, जो इन्द्रियों का दास नहीं और क्रोध के वश में होकर अपने लिए दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का यत्न नहीं करता, उसको मैं मनुष्य कहता हूं।"

भरी मरदमों से गो यह सरजमीं है।
वली देखने को भी इनसाँ नहीं है।।

❑

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (३०)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

<u>सर्वोपेता च तद्दर्शनात्।।३०।।</u>

<u>**अर्थ :-**</u> (सर्वापेता) सब (गुणों और शक्तियों) से युक्त (च) और (तद्दर्शनात्) उसके उस प्रकार देना जाने से।

भावार्थ- वेदादि शास्त्रों में उस परब्रह्म परमेश्वर को अनेक गुणों और शक्तियों से युक्त बताया है। ऋग्वेद (१०.८१.३) में कहा–

<u>"विश्वतश्चक्षरू विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरूत विश्वत्सात्।"</u>

वह परब्रह्म सभी ओर से चक्षुओं, हजारों मुखों और हजारों बाहुओं और पैरों की असीम शक्तियों से युक्त है। इसी को श्वतेताश्वतर उपनिषद् (३.१६) में कुछ इस प्रकार बताया है–

"सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावत्य तिष्ठति।।"

सब ओर उसके हाथ और पैर है और सब ओर उसकी आंखे, सिर और मुख है। इसके अतिरिक्त सभी दिशाओं में उसके कान है और वह इस संसार में सबको चारों ओर से आवत करके यानी ढ़ककर स्थित है। आगे ऋग्वेद (२.१६) में कहा है–

''विश्वान्यक्ष्मिन् सभ्भताऽधिवीर्य।''

इस व्यापक ब्रह्म में सभी महान् से महान शक्तियां मरी हुई हैं। विभिन्न शास्त्रों में ऐसे प्रमाण भरे पड़े हैं जिनसे ब्रह्म को समस्त गुणों और शक्तियों से युक्त बताया गया है। ब्रह्मके विषय में ऐसी आशंका करना निराधार है कि जगत् की रचना में प्रकति के परिणाम के लिए उसे अन्य साधनों की अपेक्षा होगी या उसके ईक्षण से (संकल्प से) पूर्ण प्रकति में प्रेरणा होगी या उसके किसी एक अंश में। इस आशंकाओं के आधार पर उसके जगत् का कारण होने में कोई रूकावट न होगी। अर्थात् वह बाहरी साधनों से रहित होता हुआ भी जगत् की रचना करने, के कार्यो में समर्थ है और उस सर्वशक्ति सम्पन्न ब्रह्म द्वारा की गयी जगत् की रचना पूरीतरह से सुव्यवस्थित है।

– शिष्य आशंका करता है कि हाथ, पैर, आदि इन्द्रियों के साधनों से रहित होने पर भी ब्रह्म जगत की रचना में कैसे समर्थ होता है। इसका निराकरण सूत्रकार अगले सूत्र में करते हैं।

– सी-२ए/६० जनकपुरी,
नई दिल्ली-५८

❑

Question & Answer

Creation of Universe

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : Is it not true that this creation of GOD – The World - Universe could be beautiful, if the tradition of 'choice of rewards' been blessed to the 'Tapasvis' (mainly engaged in meditation) with held by the Almighty itself, instead of being asked for 'Vardaan'? As GOD being parent to the whole Universe should be prayed with just true devotion & dedication, to be well tuned-up to all HIS endeavours! The sufferings experienced by the humanity are due to 'Imbalance' Mostly caused by disrupting of the 'motion of nature' by making 'Wishes', then its fulfillment & finally using it - not in the manner as it was fulfilled for! **Rajiv Ohri**

Ans : Fundamental law of God is ever unchangeable. Shwetashetoropnishad, shloka 6/8, in this connection states "Swabhwiki Gyan bal Kriya Che" i.e., knowledge, power and deeds in action of the Almighty God are natural/automatic at fixed time and God has nothing to do with the same. Only God's power acts. Rigveda mantra 10/191/3 states that the creation takes place automatically, by the grace of God and even the process of creation is unchangeable. In this connection, the said mantra clarifies- " Surya Chandra Maasav Dhata Yatha Poorvam Akalpayat". Meaning :- Dhata=Who holds the universe like (Almighty God). Surya Chandra Masav=Sun and moon. Yatha Poorvam= same as created in the previous creation. Akalpayat=created.

Central Idea :- The Almighty God has created this universe similar to the previous one (sun, moon, earth, water, air, bodies of living beings etc. etc.). So the atmosphere death-birth, respiratory system will remain same.

Secondly, the most important knowledge of the Vedas is stated in Yajurveda mantra 13/4 "Bhootrya Jatah Patirek Aseet" i.e., the God, Who is the creator of five matters, is one, Was one and will ever remain one. Yajurveda mantra 27/36 states- Na Jatah Na Janehyate" i.e., equivalent to the said God neither another God was born nor will be

योगः कर्मसु कौशलम्

- डॉ० अजय कुमार पाठकः

युजिर् योगे युज् समाधौ संयमने तथैव च।
अर्थत्रयः विजानीयात् संयोगो योग उच्चयते।।

युज् धातौ घञ् प्रत्यये योगः शब्दः व्युत्पन्नः। योग शब्दस्यार्थः मेलनं इत्युच्यते। षड्दर्शनस्य एकः प्रकारः 'योगदर्शनम्' अपि वर्तते। दश्यते अनेन इति दर्शनम्। योगदर्शने – "योगश्चित्तवत्तिनिरोधः" इति महर्षिपतञजलिना कथितम्। योगेन आत्मसाक्षात्कारः भवति। परिणामतः मानवः मुखं, आनन्दं, हर्षोल्लासं, स्वास्थ्यञच अचिरं प्राप्तुम् अर्हति। श्रीमद्भगवद्गीतायां भगवान् श्रीकष्णः कथयति "यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया" इति। योगस्य परिणामः योगदर्शनेपि उक्तम् "तदा द्रष्टुः स्वरूपेवस्थानम्।" (१/३), वत्तिसारूप्यमितरत्र। (१/४)

गीतादर्पणे स्वामी रामसुखदासः कथयति यत् सर्वे मानवाः प्रभुप्राप्त्यधिकारिणः सन्ति। श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगस्य, ज्ञानयोगस्य, भक्तियोगस्य च समानता वर्तते। गीतादर्पणे अयं श्लोकः लिखितः–

त्रयो हि योगा सुगमा वरिष्ठाः सिद्धिप्रदाः पापनिवारकाश्च।
तुष्टिप्रशान्तिप्रदसाम्यदाश्च ज्ञानाच्छदातार उदीरिताश्च।।

–: क्रमशः :–

साभार : संस्कत मंजरी, जुलाई-सितम्बर, २००७

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

born in future In the Yog shastra sutra 3/45 Rishi Patanjali states that no one can be equivalent to God and thus no one can create even a single atom of the universe except God i.e., Why soul, prakriti and God are always separate from each other. Anyone who claims Him as God is totally against the Vedas, shastras, Bhagwad Geeta, Upnishad, mahabharat, Valmiki Ramayan, Shatpath Brahmin Granth, Nighantu etc. Reason behind is that no one is able to create any part of this world and no one can be omnipresent like God. Since fundamental law of nature of God is also, you can say indirectly, obeyed by God Himself. Then what to talk about a man, Yogi, Rishi, Muni etc. In this connection, Yajurveda Mantra 1/5 also refers in Yog Shastra Sutra 3/45 and Yajurveda Mantra 7/ 4 it is clarified that Yogi can never create any single part of universe. That is why, Yogi(soul) is separate and Almighty God is separate. Vedas state that though a Rishi, Muni, Yogi through Vedas and Ashtang Yoga practice can realize God, but they can not ever be equivalent to God. And Fundamental law of universe made by God Himself, being unchangeable, God can never delegate His power of creation to Rishi-Muni and even Rishi-Muni do not have such broad mind that their minds be compared with God for creation etc., because God is formless and has no form, body etc. Your above thinking come under "Viparya Vritti" amongst five vrittis of chitta (mind) mentioned in Yog Shastra sutra 1/8. I would advise you to study detailed comments on every sutra of Yog Shastra Pt. I & II written by me. Samveda Mantra 210 too states that God listens prayer in Yajyen done through Ved Mantras. Samveda Mantra 255, 256, 257 state that worship God with Ved mantras. And next Samveda Mantra 258 claims that while reciting Ved mantras in Yajyen, the sins are burnt. Now it is up to anybody to pray God, adopting God-Made process or Man-Made one. Nature (prakriti) is being disrupted by the human-beings. Vedas tell that if you will listen, adopt and observe Vedas preach and perform Yajyen through Ved mantras, then there will be no pollution/disturbance. In the absence of listening of Vedas and performing Yajyen, we are not able to understand the law of nature(God) and even we fail to understand the unlimited qualities of God Who creates, nurses and destroys the universe and Who is one only. According to Yajurveda Mantra 40/8, He never takes birth. If we would be able to adopt the said path, adopted in ancient times by Shri Ram, Dashrath, Krishna Maharaj, Vyas Muni etc., then we will matter unnecessary wishes (which can never be fulfilled, to God.

To be continued...

एकादश समुल्लास : विविध भारतीय मतमतान्तर

सत्य यह है कि पाँच सहस्र वर्ष से पूर्व इस देश में वेद के मत के सिवाय कोई अन्य मत नहीं था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरूद्ध होने से सबको वे ही मान्य थीं। किन्तु वेदों की अप्रवत्ति बढ़ने पर महाभारत युद्ध हुआ। धीरे–धीरे अविद्यान्धकार बढ़ते जाने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होने पर, जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। महाभारत युद्ध के बहुत वाद बने पुराणादि ग्रन्थों के रचनाकाल में अनेक मत शाखा-शाखांतर रूप में भारत में चले हैं। यहां यह उनके विषय में केवल सत्यासत्य के निर्णय की भावना से ही कुछ कह रहे हैं, विरोध की भावना से नहीं, ताकि सर्वशक्तिमान परमात्मा सब मनुष्यों के आत्मा में एक मत में प्रवत्त होने, परस्पर का मिथ्या विरोध छोड़ सत्य का ग्रहण कर आनन्द की प्राप्ति में समर्थ करें। इन्हीं मतमतान्तरों के प्रचलन के कारण सष्टि के आदि से लेकर महाभारत पर्यन्त चला आने वाला आर्यो का चक्रवर्ती राज्य समाप्त हुआ और आर्यो के अभाग्योदय से यह देश विदेशियों से पादाक्रान्त हुआ। इस सब का एकमात्र कारण वेदों के प्रति अज्ञान का बढ़ते जाना ही था।

सर्वप्रथम हमें 'ब्रह्मणों' के नाम पर जन्मना 'धर्म' पर एकाधिकार कर लेने वालों की पोपलीला की पोल जान लेनी चाहिए। श्राद्ध, स्वर्ग-नरक आदि की अनेक मिथ्या भ्रांतियों में ये सामान्य मनुष्यों की मति को भटकाए रहते हैं, जबकि स्वयं महा अज्ञान में फँसे रहते हैं। पुराणादि में जितनी भी गलत बातें भरी हैं, इन अज्ञानियों ने अपने स्वार्थो के ही कारण भरी हैं। उनमें वेदानुकूल सत्य बहुत थोड़ी मात्रा में रह जाने के कारण ही हम उन्हें पढ़ने व मानने का विरोध करते हैं। जब ब्राह्मण अज्ञानी होने के कारण अच्छा उपदेश नहीं दे सकते, तब सत्योपदेश की परम्परा कैसे चलेगी। परिणाम यह है कि इस देश में 'वाममार्ग', शक्तधर्म', भैरवमत' आदि का प्रचलन हुआ। इन सब में ही धर्म के नाम पर केवल अनाचार का ही बोलबाला रहा। स्त्रियों की मर्यादा को भुला कर इन मतवादियों ने कामाचार को ही धर्म का आडम्बर दे दिया। यह पतन यहाँ हुआ कि माता और पुत्री तक का विचार–अविचार जाता रहा। यज्ञों की वैदिक परम्परा लुप्त होकर पशु–हिंसा एवं अवैदिक पूजन पद्धतियों का प्रचलन हुआ। जैन लोगों की देखादेखी पाषाण–प्रतिमा या मूर्ति बना कर विविध देवी–देवताओं की जड़वादी पूजा होने लगी।

–: क्रमशः :–

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आकाशवाणी दिल्ली के कार्यक्रम "आधा आकाश" में प्रसारित वार्ता

ज्योति स्वरूप महर्षि दयानन्द

भारतवर्ष को अज्ञान के अन्धकार से निकलने के लिए आर्यसमाज की स्थापना करने वाले ज्योति स्वरूप महर्षि दयानन्द का स्मरण अत्यन्त श्रद्धा तथा आदर से किया जाता है। युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय संस्कति के संवाहक, प्राचीन वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित करने वाले के रूप में प्रसिद्ध हुए। ऋषि दयानन्द से पूर्व लोग धर्म के यथार्थ स्वरूप को भूलकर अनेक मत-मतान्तरों में उलझे हुए थे। मिथ्या कर्मकाण्ड, भ्रान्त धारणाएं संसार को दिशाहीन कर रहीं थीं। ऐसे में स्वामी दयानन्द ने जनमानस को वैदिक ज्ञान की देन प्रदान की। उन्होंने संसार को बताया कि वेदों की ओर लौटो, क्योंकि केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं और वेद पथ का पथिक हुए बिना मानव जाति का कल्याण नहीं हो सकता। वेद प्रचार द्वारा उन्होंने भारतवासियों को उनके गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कराते हुए धर्म के वास्तविक स्वरूप का उद्घाटन किया। धर्म के नाम पर अनेक सामाजिक कुरीतियां और पाखण्ड फैल रहे थे, जिनका निराकरण करते हुए स्वामी दयानन्द ने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों, मान्यताओं और संस्कति के प्रचार–प्रसार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने आर्यसमाज को एक उद्यान की संज्ञा देते हुए कहा – "मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है। इससे मेरी अवस्था माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ जाया करती है। मुझ पर राख और मिट्टी चाहे जितनी भी पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं; परन्तु मेरी वाटिका हरी-भरी रहे निर्विघ्न फूले-फले, यही मेरी हार्दिक कामना है।"

वस्तुतः अन्धविश्वास और भ्रमजाल के नाश का कार्य स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु पूज्य स्वामी विरजानन्द जी के आदेश से किया। अपने समावर्तन संस्कार के समय गुरु से विदा लेते हुए विद्यार्थी दयानन्द भेंट स्वरूप अपने गुरुजी की प्रिय वस्तु लौंग लेकर आए। गुरु विरजानन्द अपने शिष्य दयानन्द के भीतर की उर्जा से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने लौंग को लेने से इन्कार कर दिया और आदेश दिया कि जाओ वत्स ! भारत देश में दीन–हीन जन अनेक विध दुःख पा रहे हैं, तुम ज्ञान से मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और जाओ इनसे जनमानस का उद्धार करो, यही मरी दक्षिणा है। इसी गुरु दक्षिणा के भाव को स्वामी दयानन्द जी ने अपना लक्ष्य बनाया और क्षेत्र की ओर अग्रसर हो गए।

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे अध्याय में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा है कि 'जो सच्चिदानन्द स्वरूप, नित्य, शुद्ध, मुक्त स्वभाव वाला, बन्धन रहित, कपा का सागर, ठीक–ठीक न्याय करने वाला, जन्म–मरण और क्लेश रहित सुख का सागर, जिसका आकार नहीं है, सर्वव्यापक, सबके घट–घट का जानने वाला, सबका पिता, उत्पन्न करने वाला, पालन करने वाला, सभी सुखों से युक्त संसार को बनाने वाला है, ऐसे परमात्मा को प्राप्त करने की कामना करना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। इस परमपिता का जो शुद्ध चेतन स्वरूप है उसी को हम धारण करें। उस परमात्मा को छोड़कर दूसरी किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें क्योंकि परमात्मा के समान दूसरा नहीं है और परमात्मा से बड़ा दूसरा कोई नहीं है।

धर्म संशोधक के अतिरिक्त सामाजिक दुष्प्रथाओं से डटकर लोहा लेने में स्वामी दयानन्द अग्रणी रहे। बाल–विवाह, अनमेल विवाह, सती–प्रथा आदि का विरोध करते हुए नारी जाति की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया। स्त्री शिक्षा का प्रचार करके स्त्रियों को वेदाधिकार दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। प्राचीन शास्त्रकारों ने नियम बनाकर स्त्रियों और शूद्रों को शिक्षा से वंचित कर दिया था। ऋषि दयानन्द ने इस नियम को अवैदिक बताकर स्त्रियों को न केवल शिक्षा अपितु वेद पढ़ने का भी अधिकार दिलया। वस्तुतः नारी सशक्तिकरण का पहला कदम नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द ने ही उठाया था, जिसके लिए नारी जाति सदैव उनकी ऋणी रहेगी। इसके अतिरिक्त भारतीय राष्ट्र के अभ्युदय के लिए स्वराज्य, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वदेशी का मन्त्र जनसाधारण में फूंका। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्योति स्वरूप महर्षि ने अपने जीवनकाल में अद्भुत क्रान्तिकारी कार्यों को सम्पन्न किया। वे वास्तव में ज्योति स्वरूप थे।

– शेष पष्ठ ६ पर

आर्यसन्देश – प्रथम अंक : प्रेरक व्यक्तित्व

समर्पित समाजसेवक स्व० श्री देसराज चौधरी

देसराज चौधरी उन स्वतंत्रता सेनानियों में थे, जिन्हें स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश के नव निर्माण की नीवं में भी विशिष्ट योगदान का अवसर मिला। सार्वजनिक जीवन में उन्होंने आचरण के उच्चतर मानदण्ड कायम किये और सिद्धान्त की कीमत पर सुविधा का वरण करने के लिए कभी तैयार नहीं हुए।

चौधरी साहब ने छह दशक की एकाग्रनिष्ठ सेवा से सार्वजनिक जीवन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई – जननेता, संगठनकर्ता और प्रशासक के रूप में। परन्तु उनका प्रमुख योगदान समाजसेवा के क्षेत्र में था, जिसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जायेगा। वह जनता के सच्चे सेवक और मानवता के पथ प्रदर्शक थे।

देसराज चौधरी का जन्म १६ सितम्बर, १९०६ को पटियाला रियासत के बमाल गांव में हुआ। दसवीं तक उनकी आरम्भिक शिक्षा लुधियाना में हुई। वह हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे। महर्षि दयानन्द की सत्यनिष्ठा, स्वामी श्रद्धानन्द की निर्भयता और महात्मा गांधी की सादगी का उन पर गहरा असर हुआ तथा वह इन महापुरूषों द्वारा प्रदर्शित सेवापथ के अनुगामी बन गये। १९४७ में देश विभाजन के कारण आए शरणार्थी भाइयों को बसाने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया। वह आर्यसमाज के अग्रणी नेताओं में थे। आप आर्य केन्दीय सभा, दिल्ली के अध्यक्ष भी रहे।

चौधरी जी की कर्मभूमि दिल्ली थी, जिसे संवारने में उन्होंने बड़े मनोयोग का परिचय दिया। उन्हें अपार लोक प्रियता भी मिली और उन्होंने नगर निकायों के वरिष्ठ पदों को तीन दशक से अधिक तक सुशोभित किया। नगर निगम का विकेन्द्रीकरण कर क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना और उन्हें पर्याप्त अधिकार दिलाने में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई।

देसराज चौधरी मानवता के सच्चे सेवक थे और उन्हें जनता के सभी वर्गों का समादर प्राप्त हुआ। उन्होनें सहस्रों दीन–दुखियों को स्वावलम्बी बनाकर सद्गहस्थ और अच्छा नागरिक बनाया। जीवन संगिनी चन्द्रवती चौधरी इस सेवापथ पर उनकी अनुगामिनी बनीं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने १९१८ में १६ निराश्रित बच्चों को लेकर जिस आर्य अनाथालय की स्थापना की थी, चौधरी जी के दक्ष प्रबन्धन का स्पर्श पाकर वह चमक उठा। उनके जीवन काल में इसमें आश्रय पाने वाले बच्चों की संख्या ६५० तक पहुंच गई। दक्षिण दिल्ली में 'चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर' की स्थापना कर उन्होंने बेसहारा बालिकाओं की उच्चतर शिक्षा का इन्तजाम किया। दस एकड़ का यह भूभाग अब देसराज परिसर के नाम से विख्यात है।

आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस और देसराज परिसर, ईस्ट ऑफ कैलाश में इस समय १,५०० निराश्रित बालक–बालिकाओं को आवास, भोजन और शिक्षा की सुविधा निःशुल्क प्रदान की जा रही है। इन बच्चों के रहन–सहन का स्तर मध्यम वर्ग के समकक्ष है और उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर अच्छे पब्लिक स्कूल से किसी भी प्रकार कम नहीं।

तत्कालीन रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडीज इन संस्थाओं का अवलोकन करने पर यह कहने के लिए प्रेरित हुए कि देसराज चौधरी का योगदान मदर टेरीसा द्वारा किये गये कार्य से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

देसराज चौधरी जुझारू योद्धा थे। उन्होंने जहां मातभूमि की मुक्ति के लिए संघर्ष किया और जेल यातनाएं सही, वहां स्वतंत्रता प्राप्ति कि पश्चात् लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति संकट उत्पन्न होने पर तत्कालीन निरंकुश सत्ता को चुनौती देने का साहस भी किया। आपात स्थिति लागू होते ही २६ जून, १९७५ को उन्हें बन्दी बना लिया गया। कारावास के दौरान उनके स्वास्थ्य को जो आघात लगा, उससे वह उबर नहीं सके। ११ नवम्बर, १९८३ को उन्होंने यह नश्वर काया त्याग दी।

देसराज चौधरी की पुण्य स्मति में व्याख्यानमाला का शुभारम्भ १६ सितम्बर, १९८४ को मोरारजी देसाई के ऐतिहासिक व्याख्यान से हुआ। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश हंसराज खन्ना ने उस अवसर पर अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा, ***"चौधरी जी के व्यक्तित्व में देश के दो महान संगठनों-स्वतंत्रता पूर्व की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और आर्यसमाज को चरित्रवान बनाने और उसे वीरोचित सांचे में ढालने की अपार क्षमता थी।***

– शेष पष्ठ ६ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर-०८

२४ मई से १ जून, २००८

स्थान : कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-३, दिल्ली-५२

उद्घाटन समारोह : शनिवार २४, मई, २००८
समापन एवं दीक्षान्त समारोह : रविवार १ जून, २००८
विशेष प्रशिक्षण : योग, आसन, प्राणायाम, संध्या, हवन, धर्मशिक्षा, शिष्टाचार, सैनिक शिक्षा, दण्ड बैठक, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, कमाण्डो ट्रेनिंग, आत्मरक्षा, कराटे, लाठी, खेल।

आर्यवीरों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर प्रशिक्षण प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए – **आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली-२, दूरभाष : २३४५०४८६४, www.aryaveerdal.org** पर सम्पर्क करें।

-: निवेदक :-

वीरेन्द्र आर्य संचालक (9811130250) **अश्विनी आर्य** महामन्त्री (9868586720)

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर

२५ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्ष गुरुकुल नोएडा, सैक्टर-३३, नोएडा (उ०प्र०)

प्रवेश शुल्क : १५०/- रुपये प्रति वीरांगना

आर्यसमाजों में संचालित होने वाली प्रत्येक आर्य वीरांगना दल शाखा एवं आर्यसमाजो से निवेदन है कि अधिकाधिक आर्यवीरांगनाओं को इस शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु पंजीकरण कराएं।

-: निवेदक :-

स्वामी उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**अंजू बजाज**	**विमला मलिक**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
9891125554	9810702760	51550176	25597794

पृष्ठ 5 का शेष

ज्योति स्वरूप महर्षि .....

जनजागरण के साथ–साथ स्वामी दयानन्द ने अनेक ग्रन्थों की रचना की किन्तु साथ में यह भी कहा कि यदि मेरी कोई बात वेद विरुद्ध निकले तो उसे न माना जाए। उनके इस कथन से स्पष्ट होता है कि वेद के प्रति उनकी निष्ठा उच्च स्तर की थी। स्वामी जी के कुछ उल्लेखनीय ग्रन्थ इस प्रकार है। :– यजुर्वेद भाष्य भूमिका, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, अष्टाध्यायी भाष्य, काशी शास्त्रार्थ, भ्रमोच्छेदन आदि।

महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कार्यों से अनेक भारतीय चिन्तक बहुत प्रभावित हुए। योगीराज अरविन्द की धारणा महर्षि के प्रति उल्लेखीनय है। वे लिखते हैं – ***"भारत की भावी संतति को अनेक लोकोत्तर महापुरुष भारतीय नवजागरण के शिखर पर दिखाई देंगे। उनकी महामण्डली में एक व्यक्ति अपनी अनूठी और अनुपम विशेषता के कारण औरों से स्पष्ट पथक दीख पड़ता है - अपने ढंग का अनोखा और अपने काम में औरों से निराला। यह ऐसा लगता है जैसे कोई बहुत समय तक एक कम या अधिक ऊंची पर्वत श्रंख्ला के बीच घूमता रहे तो दूर तक एक विशाल परिधि वाली और भीर-भरी हो और अपनी गगनचुंबी एवं आकर्षक ऊंचाई के होते हुए भी नयनाभिराम हो, किन्तु उस श्रंखला के बीच एक पर्वत उसे एकदम अलग-थलग दिखाई दे। उसी प्रकार ऋषि दयानन्द ऐसे दिखाई देते हैं मानो निराला बल ही मूर्तिमान होकर पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया है, नग्न और सुदढ़ ठोस चट्टान का पुंज, विशाल उत्तुंग। उसकी हरी-भरी चोटी पर खड़ा सनावर का वक्ष आकाश से बातें कर रहा है, शुद्ध प्राणदायी और उर्वरक जन का एक सुविशाल जल-प्रपात मानों उसके इस शक्ति पुंज में से ही फूट-फूटकर निकल रहा है जो सारी घाटी के लिए पानी का ही क्या, स्वयं स्वास्थ्य और जीवन का भी झरना है।"***

यह छाप महर्षि दयानन्द की हम पर भी पड़नी चाहिए और इनसे प्रेरित होकर संकल्प लेना चाहिए कि महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने भीतर के अज्ञान–अंधकार को दूर करेंगे तथा समाज की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

–डॉ० उमा शशि दुर्गा
७४, साक्षर अपार्टमैंट,
यूनीवर्सिटी टीचर्स सोसायटी, ए-३,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

पृष्ठ ३ का शेष

निर्गुण दर्शन में शंकर का अद्वैतवाद अधिक प्रसिद्ध है। अद्वैत दर्शनों में बल्लभाचार्य का शुद्ध द्वैत तथाशैव दर्शन का शिवाद्वेत अधिक प्रसिद्ध हैं। इन दर्शनों में एक परमेश्वर ही पाप पुण्य का कर्ता और भोक्ता माना गया है।

जीवात्मा नाम की कोई स्वतंत्र पथक शक्ति स्वीकार नहीं की जाती।

इन दर्शनों में ब्रह्म स्वयं अविद्या माया में फंस जाता है और स्वयं ही निकलने का प्रयत्न करता है, स्वयं ही गुरू है और स्वयं ही शिष्य है। वह स्वयं इस सष्टि का अपने मनोरंजन के लिए लीला या मिथ्या खेल खेलता रहता है। इन अद्वैत दर्शनों से सष्टि में न पाप रूप हैं और न दण्ड व्यवस्था चल सकती है। हिंसा, चोरी व्यभिचार, झूठ ये सब कहकर चलते रहेंगे कि यह सब अतिरिक्त किसी अन्य चेतन सत्ता को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। जगत की सही व्यवस्था त्रैतवाद में है। त्रैतवाद में परमेश्वर शुद्ध पवित्र शक्ति है .. अल्पज्ञ जीवात्मा कर्मकर्ता है और फल का भोक्ता भी है। प्रकति जड़ है केवल भोग्य पदार्थ है।

सगुण दर्शनों में वैष्णव दर्शन आते है जो हर–हालत में ब्रह्म को सगुण साकार ही मानते हैं वह बैकुण्ठ में या क्षीर सागर में सशरीर रहता है। सशरीर ही धरती पर आता है और सशरीर ही चला जाता है। यह दर्शन भी काल्पनिक है। इसमें ब्रह्म सर्वव्यापक नहीं रहता जबकि त्रैतवाद में ब्रह्म सर्वव्यापक तथा (अकायम्) अशरीरी है। इस प्रकार तुलनात्मक दष्टि से त्रैतवाद दर्शन ही यथार्थ और वैज्ञानिक है। इस दर्शन के व्याख्याता तथा द्रष्टा ऋषि महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं। विशेष अध्ययन के लिए मेरा शोधग्रन्थ त्रैतवाद का उद्भव और विकास पढ़ें।

— म० नं० १३२,
पुराना हस्पताल रोड, जम्मू
(जम्मू-कश्मीर) मो.६४१६१५१०८८

आर्यवीर दल की ५ नई शाखाओं का शुभारम्भ

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत दिल्ली के विभिन्न पार्कों व आर्यसमाजों में नियमित रूप से सैंकड़ो शाखाओं का संचालन हो हरा है। इस कड़ी में आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य के निर्देशन में पाच नई शाखाओं का शुभारम्भ आर्यसमाज दयानन्द विहार, महाराण प्रताप बाग यमुना विहार, आर्यसमाज त्रिनगर, रोहिणी सै०–७, जनकपुरी बी–१ में किया गया है। इन शाखाओं में प्रतिदिन ४०–५० तक युवक लाभ ले रहे हैं।

— बहस्पति आर्य, सहसंचालक

दयानन्द विद्यापीठ सन्कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दयानन्द पीठ सन्कोटा का वार्षिकोत्सव के अवसर पर इन्दौर, धार, उज्जैन, महू, कसरावद, राउ, कुआं, नान्दरा आदि आर्यसमाजों के हजारों कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में विद्यालय व छात्रावास के विद्यार्थियों ने अत्यन्त मनोरंजक प्रस्तुतियां दीं। यह छात्रावास ईसाई मिशनरी की गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र के निकट ही खोला गया है। इसमें आदिवासी छात्र-छात्राओं की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। छात्रावास व स्कूल संचालन से जहां सनातन धर्म की रक्षा हो रही है, वहीं अनेक व्यक्ति आर्यसमाज व वैदिक धर्म को समझकर उनके अनुयायी बन रहे हैं। इसके प्रमुख संचालक पवन शास्त्री, विष्णुकान्त शुक्ल, श्री बालकष्ण आर्य हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता व अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य के आह्वान पर गुरुकुल पद्धति से संचालित छात्रावास को हजारों रुपयों का सहयोग प्रति वर्ष देने की घोषणा जनता द्वारा की गई, ताकि संचालन व्यवस्थित हो सके।

— प्रबन्धक

पृष्ठ 5 का शेष

श्री देसराज चौधरी के व्यक्तित्व का विकास इसी परिवेश में हुआ।"

उच्चतम न्यायालय के एक अन्य न्यायाधीश वी०आर० कष्ण अयय्र ने २६ सितम्बर, १६८७ को अपने व्याख्यान में कहा, ***"देसराज चौधरी स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले और उसके बाद भी सतत संघर्षशील रहे। उनके सामने एक ही लक्ष्य था-देशवासियों का जीवन स्तर उन्नत करना, उन्हें सुखी और सम्पन्न बनाना।"***

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ११ नवम्बर, १६६६ को कहा, ***"देसराज चौधरी अपनी शालीनता, मदुल स्वभाव, कर्तव्य परायणता और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के लिए हमेशा याद किये जाएंगे।"*** अपना व्याख्यान उन्होंने इस कथन के साथ समाप्त किया कि इस देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में यदि हम किंचित् योगदान कर सके तो यह देसराज चौधरी जी की स्मति को एक सार्थक श्रद्धांजलि होगी। ❖

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत, सिरोही (राज०) का १८वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत के अष्टादश वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार का ३१ मई से २ जून, २००८ को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर नए विद्यार्थियों को गुरुकुल में प्रवेश दिया जाएगा। कक्षा ५ पास १०–११ वर्ष की आयु के विद्यार्थी गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे।

— स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर
आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मार्ग स्थिति आर्यसमाज में जिलास्तरीय कार्यक्रम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वि० २०६५ को आयोजित हुआ जिसमें बीकानेर शहर की परमानन्द बस्ती, पवनपुरी, इन्दिरा गांधी नहर कालोनी, मुक्ता प्रसाद कालोनी के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र की पालना, सियाणा, गंजनेर, श्री कोलापत, छतरगढ़, आदि की आर्यसमाजों के सदस्य और अन्य गणमान्य व्यक्ति सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते श्रीकपिल आर्ष गुरुकुल, श्री कोलायत के आचार्य शिवकुमार शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्यसमाज की स्थापना से एक नए युग का सूत्रपात हुआ, स्वभाषा, स्वसंस्कति,, स्वराष्ट्र, स्वधर्म, व स्वाभिमान की भावना जन–जन में जागत होने से स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव पड़ी।

– महेश सोनी, प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज रामगली, सी-१३, हरी नगर, नई दिल्ली का
३५वां वार्षिकोत्सव
२ से ४ मई, २००८

यज्ञ : प्रातः ६.३० से ८ बजे
ब्रह्मा : महात्मा रामकिशोर वैद्य
भजन : पं० देवेन्द्र शास्त्री
प्रवचन : आचार्य शिवनारायण शास्त्री

समापन समारोह : ४ मई, २००८

यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः ८ से १० बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– डॉ० ऊषा अरोड़ा, प्रधान
श्रीमती राजेश्वरी आर्या, मन्त्री

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में
आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज रोहिणी, सै०-७ का
१७वॉ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रोहिणी का १७वॉ वार्षिकोत्सव एवं १३४वॉ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया इस शुभावसर पर ६ से १३ अप्रैल,०८ तक प्रातः यज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी तथा आचार्य रामकिशोर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हुआ। सांयकालीन ११ से १२ अप्रैल ०८ को उपेन्द्र कुमार आर्य के भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया तदुपरांत आचार्य अखिलेश्वर जी ने वेद प्रवचन के माध्यम से ज्ञान, कर्म ईश्वर उपासना आदि पर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। दिनॉक ६ अप्रैल ०८ को विराट प्रभातफेरी का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों तथा आर्यो ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। दिनॉक १० अप्रैल ०८

आर्यसमाज सरस्वती विहार एवं शहीद स्मति चेतना समिति
शहीद भगतसिंह के शहीदी दिवस पर क्रान्ति-गीत संध्या

आर्यसमाज सरस्वती विहार एवं शहीद स्मति चेतना समिति की ओर से शहीदेआजम भगतसिंह, सुखदेव, एवं राजगुरु के शहीदी दिवस २३ मार्च की पूर्व संध्या पर क्रान्तिगीत संध्या का आयोजन आर्यसमाज सरस्वती विहार में किया गया। मुख्य अतिथि आजाद हिंद मंच महाराष्ट्र के संस्थापक अध्यक्ष आबा साहेब राउत थे।

इस अवसर पर गायकों द्वारा आजादी के संघर्ष काल के जब्तशुदा गीतों की शास्त्रीय संगीत के साथ प्रस्तुति ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। हर गीत के बाद 'वन्दे मातरम्', 'इन्कलाब जिन्दाबाद' एव 'जयहिन्द' के तुमुल घोष के द्वारा श्रोताओं ने अपनी उद्वेलित भावनाओं का इजहार किया।

– रविचन्द्र गुप्ता, संस्थापक

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, दिल्ली का
२६वां वार्षिकोत्सव
१ मई से ४ मई, २००८

यज्ञ : प्रातः ७ से ८ बजे
ब्रह्मा : स्वामी दिव्यानन्द जी
भजन : श्री आजाद मधुर शास्त्री

टंकारा के श्री दयालमुनि वानप्रस्थ आयुर्वेद चुड़ामणि से सम्मानित

टंकारा (गुजरात) निवासी, ऋषि की प्रारम्भिक अवस्था की संशोधित जीवनी के लेखक वक्ता श्री दयालमुनि वानप्रस्थ पूर्वनाम श्री दयाल जी आर्य को उनके आयुर्वेद क्षेत्र में विशिष्ट योगदान पर भुवनेश्वरी पीठ गोंडल ने आयुर्वेद चुड़ामणि से सम्मानित किया। यह सम्मान गुजरात राज्य के राज्यपाल महामहिम श्री नवलकिशोर शर्मा ने अपने कर–कमलों से चन्द्रक, श्रीफल, दुशाला व सम्मानपत्र देकर किया।

– मन्त्री

आर्यसमाज दयानन्द विहार
गुरुकुल के बच्चों को अभूतपूर्व सफलता

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली में पूर्वोत्तर प्रदेशों के वनवासी क्षेत्रों के कुछ बच्चे आवास एवं शिक्षा की सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। इन्हें पास के ही एक

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में आर्यसमाज स्थापना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ पं० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यज्ञोपरान्त कु० ऋचा आर्य ने प्रभुभक्ति का भजन सुनाया। श्रीमती किरण आर्य, श्रीमती अनुगुप्ता, श्रीमती शशि औल, श्री जगदीश नारंग तथा श्री अनिल गौतम के मुधर भजन हुए। स्वामी अग्न्यानन्दी जी के प्रवचन हुए। समारोह के मुख्य वक्ता प्रो० वेदव्रत जी विद्यालंकार थे।

— ***देवपाल आर्य, मन्त्री***

पाक्षिक/ दैनिक

आर्यावर्त केसरी

देश विदेश में प्रसारित - वैदिक संस्कृति का उद्‌घोषक

अर्थात एक समाचार पत्र ही नहीं, एक आन्दोलन भी

- पिछले छः वर्षों से कर रहा है निरन्तर आर्यत्व का उद्‌घोष
- राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है प्रसारित
- सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक व सामयिक चेतना का है सजग प्रहरी
- डीएवीपी.-भारत तथा उ.प्र. सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आर्यावर्त केसरी के प्रकाशन यज्ञ में सहयोगी बनें..

■ आज ही बनें स्वयं सदस्य। साथ ही; अपने मित्रों, शुभचिन्तकों व परिजनों में से कम से कम १० नये सदस्य बनाकर, इस यज्ञ में अपनी पावन आहुति प्रदान करें और घर बैठे माह में दो बार प्राप्त करें आर्यावर्त केसरी।

■ सदस्यता सहयोग है- दसवर्षीय 700/, पंचवर्षीय 400/, एकवर्षीय 100/ सहयोग राशि मनीआर्डर/चैक/ डिमाण्ड ड्राफ्ट से भेजिए। बाहरी सदस्यता हेतु ड्राफ्ट या मनीआर्डर ही स्वीकार्य।

आप अपनी सदस्यता, विज्ञापन अथवा सहयोग राशि देश-भर की सिण्डिकेट बैंक की किसी भी कम्प्यूटरीकृत शाखा में आर्यावर्त केसरी के बचत खाता सं० 88222200014649 में जमा करा सकते हैं।

इसकी सूचना अपने नाम पते (सदस्यता नं० सहित) लिखकर हमें अवश्य भेजें। आप अपनी रचनाएं/ सुझाव हमारे ई मेल पर भी भेज सकते हैं-

e-mail : aryawart_kesari@rediffmail.com

देश सहित विश्वभर में संवाददाता/ वितरक बनने के लिए भी सम्पर्क करें-

डॉ० अशोक कुमार आर्य- प्रधान सम्पादक, आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा- जे०पी० नगर (उ०प्र०) भारत -244221

दूरभाष : 05922-262033, मो० : 9412139333

को दोपहर आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि ब्र० राजसिंह आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री जयभगवान अग्रवाल (विधायक), श्री भजनप्रकाश आर्य, श्री अनिल आर्य एवं श्री वीरेन्द्र आर्य थे।

— ***अश्विनी आर्य, प्रधान***
नरेशपाल आर्य, मन्त्री

सर्वरक्षक 'ओ३म्' का जाप कल्याणकारी

दिनांक १३ अप्रैल, ०८ रविवार को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी में प्रवचन करते हुए आचार्य डॉ० छविकष्ण जी शास्त्री ने कठोपनिषद् के एक श्लोक को उद्धत करते हुए कहा कि सारे वेद जिस पद का गुणगान करते हैं, सारी तपस्या और ब्रह्मचर्य का फल जिस पद को प्राप्त करना है, वह पद 'ओ३म्' है। ओ३म् की महिमा का गुणगान अन्य अपने उपनिषदों नें भी हुआ है। यद्यपि प्रणव और उद्‌गीथ के ही पर्यायवाची हैं तथापि ओ३म् परमेश्वर का निज और प्रमुख नाम है।

प्रवचन के आरम्भ में श्रीमती उषा बवेजा के सुमधुर भजन ने श्रोताओं को मन मोह लिया।

— ***कष्णलाल कुमार, मन्त्री***

प्रवचन : स्वामी दिव्यानन्द जी
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
भजन–प्रवचन : रात्रि ७ से १० बजे
समापन समारोह : ४ मई, २००८

आप सब अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

— ***महात्मा आर्यमुनि, प्रधान***
अनिल कुमार आर्य, मन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस पर

शोभायात्रा सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वाधान मे आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा आर्य समाज चौंक से प्रारम्भ हुयी जो नगर के विभिन्न मार्गो से होती हुयी आर्य समाज चौंक में पहुची। शोक यात्रा मे हाथी, धोडे एवं बैलगाडियों पर चलता फिरता मंच एवं यज्ञशाला का निर्माण किया गया था। शोभा यात्रा का मुख्य आकर्षण आर्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चे हाथों मे ओ३म् पताका लेकर नगर मे जयघोष के साथ नव संवत्सर की शुभकामनाएँ दे रहे थे। जनपद के नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र से पधारे आर्य के प्रतिनिधि पूरे जोश एवं उत्साह के साथ ईश्वर एवं ऋषि दयानन्द का गुणगान करते हुए भजनो एवं जयधोष से वैदिक संस्कति की धारा बहा रहे थे

शोभा यात्रा का नेतत्व सभा प्रधान सोहन जी पाण्डेय व प्रदेश मंत्री हीरा लाल शर्मा ने किया।

— ***आर्य राजेन्द्र कपूर, मन्त्री***

मान्यता प्राप्त विद्यालय में नियमित रूप से भेजा जाता है।

अभी हाल ही में सम्पन्न हुई वार्षिक परीक्षा में दो बच्चों ने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किए। मुख्य विषयों में सभी बच्चों ने ८० से १०० प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

जिन बच्चों को लगभग एक वर्ष पहले हिन्दी में वार्तालाप करने में कठिनाई होती थी, उन्हीं में से कुछ ने हिन्दी विषय में ६८ प्रतिशत तक अंक और गणित/विज्ञान में १०० प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

— ***वीरेन्द्र पाल रुस्तगी, प्रधान***

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्रीनगर, लुधियाना (पंजाब) में

वेदारम्भ व समावर्तन संस्कार सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब) का दसवां व छठा समावर्तन संस्कार १३ अप्रैल २००८ को आयोजित किया गया । यह संस्कार आचार्य सत्याप्रिया जी द्वारा विधिपूवक करवाया गया । समारोह की अध्यक्षता श्री धनी राम जी (डायरैक्टर डी.ए.वी स्कूल) ने की। समारोह के मुख्य अतिथि डा. महेश जी विद्यालंकार का स्वागत कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल व अन्य गणमान्य महानुभावों ने गुलदस्ते व पुष्प मालाओं द्वारा किया ।

— ***मंगत राम मेहता, प्रबन्धक***

आर्यसमाज रावतभाटा, कोटा (राजस्थान) का
४२वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रावत भाटा का ४२वां वार्षिकोत्सव दिनांक १२, १३, १४ अप्रैल, ०८ को मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रदत्त शास्त्री, रावतभाटा के एस०डी०एम० श्री नखदान बारहट ने श्री ओमप्रकाश आर्य द्वारा लिखित पुस्तक "वैदिक रश्मि" का विमोचन किया गया।

आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में "आर्यसमाज को जानो" निबन्ध प्रतियोगिा आयोजित की गई थी।

श्री मोहन लाल को अपने धन से आर्यसमाज की तीन पुस्तकें प्रकाशित करने पर स्मति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में ८०० विद्यार्थियों ने भाग लिया। – ***योगेश आर्य, मन्त्री***

आर्यसमाज सोहनगंज, दिल्ली में
नवसम्वत्सर सम्पन्न

आर्यसमाज सोहनगंज कमला नगर, दिल्ली के तत्त्वावधान में ६ अप्रैल, ०८ को नवसम्वत्सर विक्रमी सम्वत् २०६५ एवं १३४वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के पावन अवसर पर यज्ञ–भजन एवं प्रवचन का आयोजिन किया गया।

इस समारोह में पूर्व निगम पार्षद एवं युवा समाजसेवी श्री अनिल शर्मा का उनकी सामाजिक सेवाओं को देखते हुए अभिनन्दन किया गया।

– ***विनय कुमार भाटिया, मन्त्री***

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक, नई दिल्ली में
निःशुल्क योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक १४ अप्रैल, ०८ से सांयकालीन निःशुल्क चले छह दिवसीय योगासन, प्राणायाम, व्यायाम एवं उपचार शिविर का समापन १६ अप्रैल, ०८ को हुआ। शिविर का उद्घाटन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान डॉ० शिवकुमार शास्त्री ने किया। योगासन, प्राणायाम का अभ्यास मुख्य प्रशिक्षक योगाचार्य श्री संजय सोलंकी (राष्ट्रीय योग स्वर्ण पदक विजेता) ने छहों दिन अत्यन्त मनोयोग कि साथ कराया। आचार्य डॉ० अरुण देव शर्मा पातजल योग–योगदर्शन के अष्टांग योग परक प्रवचनों से साधकों का सम्यक् मार्गदर्शन हुआ। शिविर आर्यसमाज के यशस्वी प्रधान एवं वैदिक विद्वान् डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस शिविर से बड़ी संख्या में साधकों/अभ्यासियों ने अपने रोगों से छुटकारा पाया तथा मानसिक एवं आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त कीं। शिविर के समापन सत्र में विशिष्ट प्रवचन करते हुए आचार्य श्री नरेन्द्र मैत्रेय ने तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्राणिधान की चर्चा की। शिविर में प्रायः वैदिक विद्वान् श्री शिवकुमार शास्त्री भी साधक के रूप में उपस्थित रहे और यथावसर साधकों का मार्गदर्शन भी किया।

– ***कष्ण लाल कुमार, मन्त्री***

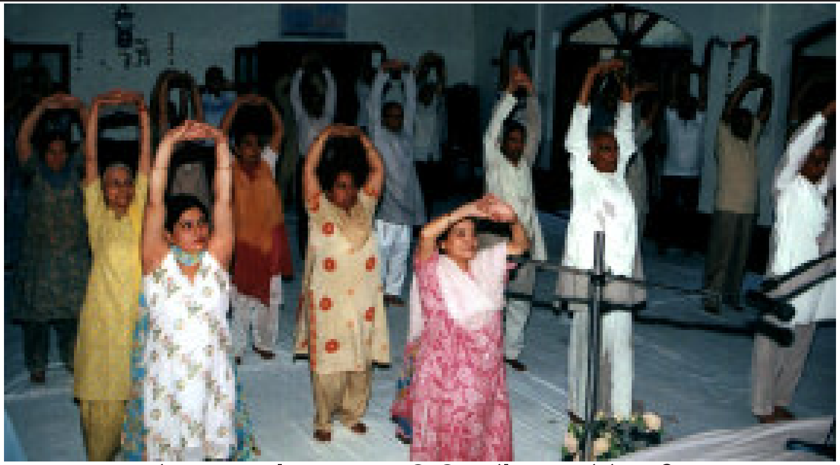

योगासन एवं प्राणायाम शिविर में भाग लेते स्त्री-पुरुष

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली का
२८वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली का २८वां वार्षिकोत्सव, चतुर्वेद शतकम यज्ञ व सत्यार्थ प्रकाश संगोष्ठी का आयोजन चैत्र शुक्ल १२ से १५ तद्नुसार १७ से २० अप्रैल, २००८ तक उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव के अन्तर्गत दिनांक १७ से २० अप्रैल तक प्रातःकालीन सत्र में ७ से ८.३० बजे तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ जिसमें क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व

दिनांक २० अप्रैल, २००८ से सत्यार्थ प्रकाश संगोष्ठी का विशेष आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य द्वारा की गई। संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य रहे।

प्रसिद्ध दानवीर व समाजसेवी श्री सुरेन्द्रपाल सिंह जी व आर्यसमाज के

अथर्ववेद के १००–१०० मन्त्रों की विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नेरन्द्रपाल जी रहे। ८.३० से ६.३० बजे तक श्री सत्यपाल सरल, देहरादून व प्रवचन स्वामी ऋतस्पति जी, होशंगाबाद द्वारा दिए गए। दिनांक २० अप्रैल को पूर्णाहुति के अवसर पर सभी यज्ञमान दम्पति उपस्थित हुए। आशीर्वाद के साथ-साथ आर्यसमाज सागरपुर की ओर से सभी यज्ञमान दम्पतियों को सत्यार्थ प्रकाश की एक–एक प्रति उपहार स्वरूप भेंट की गई। इसी प्रकार सायं कालीन सत्र में ७ से १० बजें रात्रि तक भजन व प्रवचन हुए जिसमें भारी संख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संयोजन श्री हरिसिंह आर्य ने किया। कर्मठ कार्यकर्ता श्री अशोक कुमार से प्राप्त दानराशि के सहयोग से क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों, निगम पार्षदों व जन प्रतिनिधियों को सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां निःशुल्क भेंट की गई तथा आर्यसमाज समाज द्वारा चलाए गए 'सत्यार्थ प्रकाश प्रचार योजना के अन्तर्गत' यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय व आकर्षक रहा। संगोष्ठी में निगम पार्षद श्रीमती उषा गुप्ता, श्री प्रवीण राजपूत, उद्योगपति श्री प्रद्युम्न राजपूत, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव श्री महावीर सिंह व क्षेत्रिय विधायक श्री महाबल मिश्रा एवं अनेक समाजसेवियों ने पधारकर आर्यसमाज की उन्नति में सहयोगी बनने हेतु आह्वान किया।

— जयसिंह वर्मा, प्रधान

प्रवेश सूचना

सभी आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर, जालन्धर (पंजाब) में निम्नलिखित कक्षाओं के विद्यार्थियों की प्रवेश परीक्षा ली जाएगी :–

कक्षा	**प्रवेश परीक्षा की तिथि एवं समय**
छठी	२२ जून, ०८ प्रातः १० बजे से
७वी, ८वीं, ६वीं	२६ जून, ०८ प्रातः १० बजे से
विद्या विनोद प्रथम (+१)	२७ जुलाई, ०८ साक्षात्कार
अलंकार प्रथम (बी०ए०)	२७ जुलाई, ०८ साक्षात्कार

अवश्यकताएं :- १, तीन रंगीन पासपोर्ट फोटो, २. जन्मतिथि प्रमाण पत्र, ३. विद्यालय अनापत्ति प्रमाण पत्र, ४, सफेद कुर्ता–पायजामा।

नोट :- प्रवेश परीक्षा से एक रात्रि पूर्व आने की अनुमति होगी। साक्षात्कार हेतु छात्र अपने समस्त मूल प्रमाणपत्र साथ लाएं।

सम्पर्क करें :–

प्राचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर
फोन : ०१८१-२७८२२५, ६८८८७६४३११, ६२१६१३८८८६

धूमपान छोड़िए

सिगरेट पीना छोड़िए धूमपान छोड़िए एक सिगरेट पीने से आप अपने जीवन के आठ (८) मिनट गंवा देते हैं मतलब कि आप की जिन्दगी आठ मिनट कम हो जाती है। यदि आप दिन में १० सिगरेट पीते हैं तो एक दिन में आप के जीवन के ८० मिनट कम हो जाते हैं। एक महीने में ३० x ८० = २४०० मिनट यानी ४० घण्टे कम हुए और एक साल में ४८० घण्टे यानि २० दिन कम हो जाएंगे। यदि अपने ८० साल तक जीना है तो आपके ८० x २० = १६०० दिन यानी ४ साल से कुछ अधिक दिन कम हो जाएंगे। ७६ वर्ष जीवन हो जाएगा। यदि धूमपान छोड़ दें तो आपकी श्वांस बेहतर हो जाएगी और आप अपना जीवन अच्छी प्रकार जी सकेंगे।

धूमपान से बच्चों में उत्पन्न हो सकते हैं आनुवंशिक विकार। वैज्ञानिक धूमपान व शराब के सेवन से कैंसर हाने की बात पर तो बहुत पहले से कहते हैं लेकिन अब नए अध्ययन में यह खुलासा हुआ है कि यदि पिता अध्यधिक मात्रा में धूमपान करते या शराब पीते हैं तो उनके बच्चों को आनुवंशिक रूप से नुकसान पहुंच सकता है। शोधकर्ता धूमपान और शराब के असर से चूहों पर किए गए अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इसमें उनके कष्टों और आने वाली पीढ़ी में आनुवंशिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं शोधकर्ताओं के अनुसार इसमें वीर्य और प्रोस्टेट ग्रंथि में विकार के अलावा ट्यूमर और किडनी सम्बन्धी समस्या भी उत्पन्न हो सकती है।

ऊषा

पावन प्रकाश अमत संसार को पिलाए।
ऊषा प्रभात बेला ईश्वर मिलन कराये।।

सूर्य रश्मियों के स्वागत का शुभ समागम।
कण–कण सुगन्धिवर्धक पुष्पांजलि खिलाए।।

कर्तव्य मार्ग करके सद्ज्ञान से उजागर।
जन–जन को कर्मयोगी पुरुषार्थी बनाए।।

जैसे विदुषी नारी विद्या प्रकाश फैला।
मानुषी सभ्यता की अज्ञानता मिटाए।।

भारत के भाग्य उदय का,
ऋषि लक्ष्य लेकर आये।
वैदिक ऋचा पढ़ाकर घर–घर में यज्ञ रचाए।।

दयानन्द जागरण का वरदान बनकर आए।
ऋषि राष्ट्र एकता का आह्वान बनकर आये।।

— हरवंशलाल कपूर, सहमंत्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मंदिर मार्ग नई दिल्ली-११००१

आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण शिविर

१८ मई से २५ मई, २००८

स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार दिल्ली-३२

उद्घाटन : १८ मई,०८ सायं ५ बजे **समापन** : २५ मई २००८

शिविर में जहां कन्याओं को बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, कराटे, शस्त्र संचालन, हस्तकला, संगीत, भाषण एवं विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास के सूत्र भी सिखाए जाते हैं।

शिविर शुल्क १५०/- रु० प्रति शिविरार्थी

अपने क्षेत्र की अधिक से अधिक कन्याओं को शिविर में अवश्य भेजकर नवयुवतियों को भारतवर्ष की श्रेष्ठ नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें।

-: निवेदक :-

ब्र. सुमेधा आर्या	***वीणा आर्या***	***विभा आर्या***
संरक्षिका	***संचालिका***	***मन्त्री***
९८१८७०३२२५	***९८९१२८४२५६***	***९८७३०५४३६८***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अरमान संस्था के तत्वावधान में आर्यसमाज बस्ती हरफूलसिंह के सहयोग से

तिहाड़ जेल में पूर्णिमा यज्ञ सम्पन्न

अप्रैल, ०८ में पूर्णिमा २० अप्रैल, २००८ को थी, किन्तु पूर्व व्यवस्थानुसार यज्ञ का कार्यक्रम सोमवार २१ अप्रैल, २००८ को कराया गया। श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी जी, शकरपुर दिल्ली–९२ ने युवा बन्दियों के साथ मिलकर यज्ञ कराया। श्री संजीव कोहली ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती वर्षा कोहली, अग्रज श्री सुभाष कोहली तथा पिता श्री तिलकराज कोहली के साथ इस यज्ञ में भाग लिया। श्री संजीव का उस दिन जन्मदिन था। श्री तिलकराज कोहली इस कार्यक्रम में पहली बार आए और अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने इस दिन के यज्ञ का सारा भार उठाया। प्रसाद वितरण किया तथा भविष्य में आकर सहायता करने का वचन भी दिया। वे श्रीमती नीरु आर्या मन्त्री अरमान संस्था के संस्मरणों से काफी प्रभावित/ प्रसन्न हुए, जिनके सफल प्रयास से मॉरीशस की जेल में पिछले १५ वर्षों से सजा काट रहे २४ भारतीय बन्दियों को मुक्त कराया गया। वे १७ साल तक जेल काट चुके फांसी के फंदे की इन्तजार में सर्बजीत के घर वालों से पंजाब जाकर मिली। सर्बजीत की बहिन दलबीर कौर को दिलासा दिलया कि वह प्रयत्नशील रहें, 'ओ३म्' का जाप करें, ईश्वर उनकी प्रार्थना जरूर सुनेगा। वे १५ मई को ह्यूस्टन बन्दीग्रह अमेरिका जा रही हैं।

यज्ञ कार्यक्रम के प्रबन्धक डॉ० ओमप्रकाश ने बन्दियों को शुद्ध तन–मन, निर्मल बुद्धि, नेक रास्ता चुनने, अच्छी आदतें अपनाने, स्वस्थ

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली का

वार्षिकोत्सव

८ मई से ११ मई, २००८

प्रभात फेरी : ६ मई प्रातः ५ बजे से
प्रभातफेरी : ७ मई प्रातः ५ बजे से
ऋग्वेदीय यज्ञ : प्रातः ६.३० से ८ बजे
ब्रह्मा : आचार्य डॉ० अरुण देव शर्मा
भजन : स्वामी उत्तमा यति,
पं० जगमल एवं अन्य
भजन प्रवचन : सायं ७.३० से ६ बजे
आर्य महिला सम्मेलन : ८ मई, ०८
विषय : अविद्या का नामश और विद्या की वद्धि करनी चाहिए।

डॉ० श्यामसिंह शशि की ऐतिहासिक विदेश यात्रा मॉरीशस, बेलग्रेड व सर्बिया में सम्मानित

इण्डो रोमा सैन्टर स्थापित

वरिष्ठ साहित्यकार व समाजशास्त्री पद्मश्री डॉ० श्यामसिंह शशि को साहित्य, शिक्षा तथा उनकी अनेक बहुमुखी उपलब्धियों के लिए मॉरीशस, बेलग्रेड तथा सर्बिया के कई शहरों में हाल ही में सम्मानित किया गया। मॉरीशस में उन्हें मणिलाल डॉक्टर की स्मति में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था।

एक अन्य अवसर पर मॉरीशस के अद्वितीय योगदान के लिए डॉ० श्याम सिंह शशि को रोमा फ्लेग, स्मति–चिह्न तथा प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया।

बेलग्रेड के अलावा जेमुन, निश, लेस्कोव व नावीसाद नगरों में भी इंडो रोमा सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनमें पूर्वी योरोप के रोमा लेखक तथा अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

– डॉ० जे० के० शर्मा,
मीडिया प्रभारी

आर्यवीर सम्मेलन : १० मई
पूर्णाहुति एवं वार्षिकोत्सव :
११ मई, २००८

समय : प्रातः ७.३० से १२.३० बजे
प्रवचन :डॉ० कपिलदेव शर्मा वेदालंकार

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठाएं एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

— डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया, प्रधान
कष्णलाल कुमार, मन्त्री

आर्यसमाज जामनगर में
योग शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज जामनगर, खम्भालिया गेट बाहर द्वारा योग शिविर का आयोजन दिनांक १६ मार्च से २३ मार्च तक किया गया। इस योग शिविर का आयोजन अलवर राजस्थान से पधारे स्वामी देवानन्द जी की अध्यक्षता में किया गया।

— सतपाल आर्य, मन्त्री

राष्ट्रपति डॉ० अनिरुद्ध जगन्नाथ से भेंट करते हुए डॉ० शशि ने उन्हें प्रवासी भारतीय व भरतवंशी रोमा समुदाय के साहित्यकारों, कलाकारों तथा शिक्षाविदों को समय–समय पर आमन्त्रित करते रहने का अनुरोध किया।

मॉरीशस यात्रा के बाद, डॉ० शशि सर्बिया गणराज्य के इंडो–रोमानी लेखक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पूर्वी यूरोप के प्रसिद्ध नगर, सर्बिया की राजधानी बेलग्रेड पहुंचे।

डॉ० शशि ने इंडो रोमा सेंटर की बेलग्रेड की स्थापना की जानकारी भी दी, जिसके अध्यक्ष सर्बिया पार्लियामैंट के सांसद रोमा नेता योवन दमयानोविच होंगे। संस्थापक सदस्य के रूप में रोमा कवि बैराम हलिति तथा दो भारतीय लेखक डॉ० शशि व देव भारद्वाज होंगे। इस अवसर पर रोमा साहित्य–शोध–लेखन के क्षेत्र में

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, का
१०वां वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज जिला सिरोही (राज०) का दशम वार्षिकोत्सव एवं नव स्नातिकाओं का प्रथम समावर्त्तन दीक्षा समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ ६, ७, ८ जून, २००८ को सम्पन्न होने जा रहा है। इस समारोह को आर्यजगत् के पूज्य संन्यासीवन्द विद्वज्जन एवं विदुषियां सम्बोधित कर आर्यजनों को आशीर्वाद प्रदान करेंगे। बालिकाओं के बौद्धिक कार्यक्रम वेदपाठ, गायन, भाषण, व्याख्यानमाला आदि व शारीरिक कार्यक्रमों में परेड, शस्त्र संचालन, रस्से पर आसन, स्तूप, जूडो कराटे, आदि विशेष आकर्षण होंगे। कन्याओं का नवीन प्रवेश उत्सवानन्तर होगा। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कन्याओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

— स्वामी सुकर्मानन्द सरस्वती, अध्यक्ष
धारणा याज्ञिकी, प्राचार्या

विचारों से मन को संवारने के साथ–साथ 'आर्यसन्देश' के चित्रों को दिखाकर सूचित किया कि होली आदर्श उत्सव और नव सम्वत्सर २०६५ किस प्रकार आदर्श व भव्य रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व केन्द्रीय सभा ने क्रमशः आयोजित किए। डॉ. महोदय ने सभी को इत्र लगाकर वातावरण को सुगन्धित किया। बन्दियों की शीघ्र रिहाई की प्रार्थना, पुष्पवर्षा एवं संजीव जी को जन्मदिवस की शुभकामनाओं के बाद शान्तिपाठ करके कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मई, २००८ में यह कार्यक्रम २० मई को आर्यसमाज पश्चिम पंजाबी बाग द्वारा सम्पन्न होगा। इस कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक आर्यसमाजें आगामी मास का नाम तथा चार–पाच सदस्यों के नाम सभा कार्यालय में यथा समय भेजें; ताकि उनके प्रवेश की पूर्व अनुमति ली जा सके।

— आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर,
यज्ञ प्रबन्धक

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित

गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)

सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये

प्राप्त करें मात्र 1200/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

एम०डी०एच० इन्टरनेशनल स्कूल द्वारका के प्रांगण में कार्यक्रम सम्पन्न

नई दिल्ली के द्वारका क्षेत्र में नए आर्यसमाज की स्थापना

जहां-जहां आर्यसमाज वहां-वहां प्रकाश-ही-प्रकाश : महाशय धर्मपाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निरन्तर प्रयास रहा है कि दिल्ली के निरन्तर विस्तारित होते क्षेत्रों में नई आर्यसमाजों की स्थापना हो तथा जिन आर्यसमाजों के भवन नहीं हैं उनके भवन निर्माण के लिए प्रयास किए जाएं। इसी कड़ी में दिल्ली की सबसे बड़ी कालोनी द्वारका क्षेत्र में नई आर्यसमाज की स्थापना दिनांक

नवनियुक्त अधिकारियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जब तक आर्यसमाज

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली एवं आर्यसमाज द्वारका के तत्त्वावधान में कार्यक्रम सम्पन्न

के लिए स्थान नहीं मिल जाता तब तक एम०डी०एच० इन्टरनेशनल स्कूल में यज्ञ, सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम किए जाते रहें। इस अवसर पर महाशय

लिए सहयोग देने के संकल्प व्यक्त किए।

दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी ने बहुत सारी टीशर्ट बनवाई थी जिन पर आर्यसमाज द्वारका स्थापना दिवस लिखा हुआ था। ये उपस्थित सभी सदस्यों को प्रदान की गईं।

आर्यसमाज द्वारका की व्यवस्था संचालन के लिए श्री इन्द्रसेन नागपाल – प्रधान, श्री धीरेन्द्र हाण्डा – मन्त्री एवं श्री राजीव पुरी – कोषाध्यक्ष मनोनीत किए गए।

– वीरेन्द्र सरदाना, मन्त्री,
वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली

शोक समाचार

सभामन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता को पितशोक

शुक्रवार १८ अप्रैल, २००८ को श्री राधेश्याम गुप्त का ८० वर्ष की आयु में गांधी नगर दिल्ली में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनकी इच्छानुसार पूर्ण वैदिक रीति से उसी दिन निगमबोध घाट पर किया गया। उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री शिवशंकर गुप्ता ने चिता को मुखाग्नि दी।

स्व० श्री राधेश्याम गुप्त आर्यसमाज के बहुत बड़े दीवाने थे। उनकी रग–रग में आर्यसमाज समाया हुआ था। उनका जन्म हरियाणा राज्य के पुन्हाना कस्बे में हुआ था। बचपन से ही वे स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों को अक्षरशः मानने वालों में रहे हैं। आर्यसमाज पुन्हाना में

२० अप्रैल, २००८ को वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य इन्द्रदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ द्वारा किया गया। तत्पश्चात् समारोह के मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम किया गया। तत्पश्चात् मुख्य मंच से स्वामी सम्पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में सभा आरम्भ हुई। सभा में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री तथा स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के सुन्दर प्रवचन हुए। वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा एवं मन्त्री श्री वीरेन्द्र सरदाना जी द्वारा आमन्त्रित विद्वानों का पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी ने आर्यसमाज के जी को स्मति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रिय विधायक श्री धर्मदेव सोलंकी ने कहा कि दिल्ली में जहां भी आर्यसमाजें कार्य कर रही हैं वहां पाखण्ड एवं अंधविश्वास बहुत कम हैं। मुझे बड़ी खुशी है कि सभा द्वारा मेरे क्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना की गई है। आर्यसमाज के भवन के लिए जमीन दिलवाने के लिए जो भी सम्भव कार्य होंगे मैं उन्हें अवश्य करूंगा।

आर्यसमाज के लिए सदस्यों को जोड़ने में पं० जीवन प्रकाश शास्त्री एवं पं० प्रणवदेव शास्त्री का विशेष योगदान रहा। उन्होंने आर्यसमाज के बनने वाले भवन के लिए अपनी ओर से ११–११ हजार रुपये की राशि प्रदान करने का भी संकल्प व्यक्त किया। अन्य अनेक आर्यजनों तथा आर्यसमाजों ने भी आर्यसमाज के भवन निर्माण के

अध्यापकों की आवश्यकता

आगामी सत्र १ जुलाई, २००८ से श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में निम्न विषयों के अध्यापकों की आवश्यकता है। दो विषयों के विद्वान् को प्राथमिकता दी जाएगी।

संस्कत साहित्य, वेद, दर्शन हिन्दी, अंग्रेजी, पर्यावरण, गणित, विज्ञान, राजनीति शास्त्र एवं इतिहास। तन–मन से स्वस्थ सेवा मुक्त अध्यापक भी आवेदन कर सकते हैं। आवासीय सुविधा के अलावा तीन हजार मासिक दक्षिणा दी जाएगी। अकेले व्यक्ति को भोजन सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। ये विषय बी०ए० कक्षाओं को पढ़ाने हैं। आवेदन अभी से भेज दें क्योंकि किसी या किन्हीं व्यक्तियों को इस सत्र के मध्य भी बुलाया जा सकता है।

— चतुर्भुज मित्तल, प्रधान

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर-१४४८०१ (पंजाब)

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में उन्होंने एक बड़ी भूमिका निभाई। आर्यसमाज के माध्यम से वेद प्रचार घर–घर पहुंचाया।

आर्यसमाज द्वारा चलाए गए हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और तीन महीने कारावास में रहे। दिल्ली में आर्यसमाज का कोई भी कार्यक्रम होता था; वह उसमें सम्मिलित होते थे। पुन्हाने से अपने परिवार सहित आर्यसमाज के कार्यक्रमों में भाग लेने आते थे। प्रतिवर्ष आर्यसमाज दीवानहाल के वार्षिकोत्सवों में पुन्हाने से आते रहे। १९६३ में वह दिल्ली आ गए। दिल्ली आते ही वे आर्यसमाज गांधी नगर से जुड़े। कई वर्षों तक इस आर्यसमाज में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

श्री राधेश्याम गुप्त की सबसे बड़ी विशेषता थी, उनका यज्ञ एवं वेद प्रेम। दैनिक यज्ञ एवं वेदपाठ करना उनकी दिनचर्या थी। पूर्णमासी एवं अमावस्या को वे विशेष यज्ञ किया करते थे। समय–समय पर वे सपरिवार चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया करते थे। उनकी इच्छा थी कि उनके परिवार में दैनिक यज्ञ निरन्तर होता रहे। उनकी इस इच्छा की पूर्ति में उनका परिवार कार्यरत है। उनकी पगड़ी की रस्म रविवार २७ अप्रैल, ०८ को आर्यसमाज प्रीत विहार में हुई, जहां दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों से बड़ी संख्या में आर्यजन दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित थे।

श्री जुगल किशोर को मातशोक

आर्यसमाज जहांगीरपुरी, दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता एवं सहयोगी श्री जुगल किशोर जी की पूज्या माताजी श्रीमती विशन देवी का दिनांक १४ अप्रैल, २००८ को रात्रि १० बजे ६३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन किया गया। श्रद्धाजंलि सभा में सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से माताजी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। दिनांक २० अप्रैल, ०८ को भी आर्यसमाज जहांगीरपुरी में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

- सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश के मुकदमे के सम्बन्ध में

विद्वानों एवं वकीलों द्वारा गहन चिन्तन : मुकदमे का जवाब मुकदमें द्वारा, सड़कों पर प्रदर्शन इसका हल नहीं

सार्वदेशिक सभा भलिभांति अपनी जिम्मेदारियों को जानती है तथा निभाने में सक्षम है : प्रकाश आर्य

१ मार्च, २००८ को ही कैप्टन देवरत्न आर्य के वकील महोदय ने कोर्ट में प्रस्तुत होकर नोटिस स्वीकार किया

सत्यार्थ प्रकाश के भावनाशील मुद्दे को राजनीतिक हितों को साधने के लिए प्रयोग न करें

सत्यार्थ प्रकाश के वर्तमान मुकदमे के सम्बन्ध में गत अंकों में हम काफी जानकारी दे चुके हैं। दुःख इस बात का है कि इस विषय पर राजनीति तथा आपस में आरोपों का दौर चल पड़ा है। इसकी शुरुआत वैदिक सार्वदेशिक के प्रथम पष्ठ पर प्रकाशित मुख्य समाचार की मुख्य पंक्ति से परिलक्षित है। हमारा प्रयास था कि इस मुकदमे के सम्बन्ध में मिलकर एक उत्तर तैयार किया जाए। किन्तु धरने प्रदर्शन और बैठकों द्वारा ऐसा माहौल तैयार कर दिया गया है कि कुछ वरिष्ठ लोग चाहते हुए भी यह कर पाने की स्थिति में नहीं हैं। प्रस्तुत लेख में कुछ उन्हीं स्थितियों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है कि वास्ताव में सत्यार्थ प्रकाश के अखबारों में छपा जो अमतसर प्रकरण की पुनरावति मात्र ही था। जब स्वामी अग्निवेश सत्यार्थ प्रकाश में से कुछ ऐसे अंशों को बातचीत के माध्यम से कुछ समुदायों के सन्तुष्ट करने के लिए निकाल देने की बात करते हैं तो तब वे कुरान के बारे में यह कहने में क्यों हिचक जाते हैं कि कुरान में से भी ऐसे अंशों को निकाल देने के लिए आपस में बैठना चाहिए। हालांकि सत्यार्थ प्रकाश में से किसी अंश को, किसी भी प्रकार से, किसी समुदाय को प्रसन्न करने के लिए कोई भी अंश निकालने के लिए हम कभी तैयार नहीं हो सकते हैं किन्तु यदि उन्हें राजनीतिक

जब तथाकथित संत रामपाल सत्यार्थ प्रकाश का अपमान कर रहा था, तब भी सार्वदेशिक सभा एवं हरयाणा सभा ने उसके खिलाफ खोले मोर्चे में सफलता प्राप्त की। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा एक-एक शब्द सत्य, इस सत्य को कोई नहीं दबा सकता : आचार्य बलदेव

इस मुकदमें के सम्बन्ध में सभा की ओर से धन की कोई अपील नहीं

स्वामी दयानन्द की अत्यन्त नीचतापूर्ण शब्दों में धज्जियां उड़ा रहा था, सारे आर्यसमाज में इसकी व्यापक चर्चा थी और वह स्थान–स्थान पर सार्वदेशिक सभा का उल्लेख करता हुआ शास्त्रार्थ का चैलेंज दे रहा था तब कहां थे स्वामी अग्निवेश? कहां थे स्वामी आर्यवेश? कहां थे वे जो आज एक नया मंच बनाकर एक राजनैतिक शगूफा छोड़ने जा रहे हैं। क्यों नहीं तब इनकी आत्मा को झकझोरा उस प्रकरण ने। शायद **"व्यस्त"** जीवन के चलते जानकारी न मिल पाई हो ! पर क्या लगातार ढाई–तीन साल तक यह नहीं पता चल पाया कि रामपाल क्या

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक लेख, मुकदमे आदि की जानकारी हो तो उसे सभा कार्यालय में अवश्य भेजें

जी के नेतत्व में चले विराट आन्दोलन के द्वारा जिसमें एक आर्यवीर बलिदान हुआ तथा ४० से अधिक आर्यवीर घायल हुए। इस आन्दोलन को करौंथा कांड कहा जाता है। इस आन्दोलन में **आचार्य बलदेव जी** की निजी जीप को भी रामपाल के समर्थकों ने आग लगा दी। हजारों की संख्या में आर्यजनों ने उस दुष्ट संत रामपाल का अय्याशी भरा आश्रम घेर लिया। हरयाणा पुलिस ने उसे गिरफतार कर लिया तथा धारा ३०२ के अन्तर्गत मुदकमा दर्ज किया गया। हरयाणा में हुए इस आन्दोलन में दिल्ली के भी सैंकड़ो आर्यजनों ने भाग लिया। उस शहीद आर्यवीर की स्मति में बड़े–बड़े सम्मेलन किए गए

सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द जी पर निरन्तर जब संत रामपाल अपमानजनक टिप्पणियां कर रहा था, बड़े-बड़े चैलेंज का विज्ञापन अखबारों में दे रहा था तब किसने स्वीकार की थी वह चुनौति केवल पूज्य आचार्य बलदेव जी के नेतत्व में ऐसा आन्दोलन चला कि संत रामपाल आज जेल में है और उसके आश्रम पर ताला है।

हित–चिन्तक कौन हैं और कौन लोग स्वार्थों की दष्टि से इस अवसर को अपनी पहचान बनाने के लिए लग गए हैं। हमारा स्पष्ट मानना है कि मुकदमों का जवाब सही तैयारी के द्वारा मुकदमे में देना चाहिए।

आर्यसमाज के वर्तमान हालात के लिए कौन दोषी है इसके लिए आज किसी लेख की आवश्यकता नहीं है। जिन राजनैतिक हथकण्डों को अपनाकर तथा पुलिस के संरक्षण में सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर कब्जा किया गया था, उसे आर्यसमाज के इतिहास में भुलाया नहीं जा सकेगा। इतना सब होने के बावजूद जब सारे संसार के आर्यसमाज ने स्वामी अग्निवेश के नेतत्व को पूरी तरह से नकार दिया। अमतसर में दिए गए सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी वक्तव्य को लेकर आर्यसमाज में एक नई बहस शुरु हो गई। परिणाम स्वरूप उन्हें अपनी सफाई अपने पत्र तथा अन्य माध्यमों से देनी पड़ी। किन्तु उनकी विश्वसनीयता आर्यसमाज में और कम हुई। आज जब सत्यार्थ प्रकाश पर दो मुस्लिम बन्धुओं ने दिल्ली की तीस हजारी कोर्ट में मुकदमा किया, तो १६ जनवरी को मुकदमा होने की तारीख से उनकी नींद १२ अप्रैल, २००८ को जाकर क्यों खुली? और १८ अप्रैल को उनका बयान फिर से व्यक्तित्व भी कहा जाए तो भी बड़ा स्पष्ट है कि वे कुरान के बारे में एक भी शब्द कहने से बचते रहे हैं। "क्यों?" इस क्यों का जवाब हम सबके पास है।

संत रामपाल ने जब सत्यार्थ प्रकाश को चुनौति दी और अत्यन्त घणित शब्दो में निन्दा की तब कहां थे ये महानुभाव

आज तो केवल दो मुस्लिमों ने तीस हजारी कोर्ट केस के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश पर बैन लगाने की बात ही की है। आज इतनी सक्रियता दिखाने की कोशिश करने वाले स्वामी अग्निवेश, स्वामी आर्यवेश एवं अन्य वे सभी जो इसके लिए न जाने कितने बड़े–बड़े धरने, प्रदर्शन, यात्राएं आदि निकालने की बात कर रहे हैं। उनसे हमारा एक ही सवाल है कि जब ढाई–तीन सालों तक या उससे भी अधिक समय तक **'संत रामपाल'** नाम का व्यक्ति सारे भारत में जगह–जगह भाषणों द्वारा विभिन्न चैनलों में अपने कार्यक्रमों, पंजाब केसरी में पूरे–पूरे पष्ठ के विज्ञापनों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश और प्रपंच रच रहा है। दुःख इस बात का है कि पूरे ढाई–तीन साल तक इनमें से किसी एक ने भी अपने भाषण, या लेख या मुदकमे द्वारा विरोध नहीं किया। न ही आचार्य बलदेव जी के नेतत्व में चले इस आन्दोलन में भाग लेना ही उचित समझा। और तो और आर्यसमाज के इस ऐतिहासिक आन्देलन की खबर को अपने पत्रों में छापने का साहस तक नहीं कर सके। सबसे पहले हरयाणा सभा के माननीय **प्रधान पूज्य आचार्य बलदेव जी** ने उसको ललकारा। उसके विरोध में सारे हरयाणा में बड़ी–बड़ी सभाएं की गईं। अखबारों में विज्ञापन निकाले गए। सारे हरयाणा की यात्रा की गई। दिल्ली में जब संत रामपाल ने अपना कथा प्रपंच रचा तो भजनपुरा में दिल्ली सभा के **प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य** तथा अन्य आर्यजनों ने उसको ललकारा, शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज स्वीकार किया। फलस्वरूप उसी समय उसको तत्काल अपना कार्यक्रम बीच में ही छोड़कर भागना पड़ा। इस सारे प्रकरण को अन्तिम विराम दिया आचार्य बलदेव तथा इस आन्दोलन के बाद में भी उसको किसी हालत में छोड़ा न जाए, इसके लिए रोहतक में बड़े धरने का आयोजन किया गया। इस घटनाक्रम को लिखने के पीछे हमारा उद्देश्य यह है कि आर्यजन भलीभांति यह बात जान लें कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकरण पर वास्तविक दुःख किसे है और केवल सत्यार्थ प्रकाश के भावनात्मक मुद्दा बनाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करने में कौन लोग लगे हैं।

जो किया जाना आवश्यक था वह तत्काल किया गया

खैर ! मुकदमा १६ जनवरी को तीस हजारी अदालत में डाला गया, पार्टियों को नोटिस भेजे गए। जाहिर है ३/५ आसफ अली रोड को भी नोटिस भेजा गया होगा। जिस पर सुनवाई की अगली तारीख एक मार्च दर्शायी गई होगी। आखिर उसे स्वीकार क्यों नहीं किया गया? क्या इसलिए कि एक्स पार्टी डिसीजन हो जाए?

संयोग ही कहा जाएगा कि १ मार्च, २००८ को अन्य मामलों में दिल्ली सभा के वकील श्री रवि चावला जी किसी मुकदमे की पैरवी के समय कोर्ट में थे। उन्होंने अपने मुकदमें को देखते हुए जब लिस्ट में सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में मुकदमे को देखा।

— शेष पष्ठ १२ पर

साप्तहिक आर्य सन्देश
28 अप्रैल, 2008 से 4 मई, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १/२–०५–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

डॉ० श्यामसिंह 'शशि' उ०प्र० सरकार द्वारा लोहिया साहित्य सम्मान से सम्मानित

लेखक ने दो लाख की सम्मान राशि हिन्दी के लिए दान कर दी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से उ०प्र० के संस्कति मंत्री श्री नकुल दुबे द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री डॉ० श्यामसिंह शशि को उनकी हिन्दी सेवा के लिए डॉ० राम मनोहर लोहिया साहित्य सम्मान २८ मार्च को यशपाल सभागार लखनऊ में अर्पित किया गया। उन्हें शाल ओढ़ाकर दो लाख रुपये की सम्मान राशि भेंट की गई जिसे उन्होंने सामाजिक शोध तथा सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश के निर्माण के लिए दान दे दिया।

डॉ० शशि ने बताया कि आजादी के ६० वर्षों के बाद भी सामाजिक विज्ञानों का एडविन सैलिंगमैन के 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज' जैसा एक भी विश्वकोश हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। रिसर्च फाउंडेशन द्वारा संचालित 'सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश' की विशाल परियोजना के अन्तर्गत उनके द्वारा निर्मित तथा सम्पादित तीन खण्ड प्रकाशित हुए हैं। कुल २५ खण्डों का निर्माण, संपादन तथा प्रकाशन होना है जिसके लिए सैलिंगमैन के विश्वकोश की तरह करोड़ो रुपये की आवश्यकता होगी। अलबत्ता डॉ० श्यामसिंह शशि द्वारा सम्पादित दो अन्य खण्ड अभी प्रकाशनाधीन हैं।

— डॉ० जे० के० शर्मा,
मीडिया प्रभारी

वैदिक यति मंडल की बैठक सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए आन्दोलन का संकल्प सुरेन्द्र सिंह कादियान के लेख की निन्दा १२ अप्रैल को दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) के सभागार में वैदिक यति मण्डल मे अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सर्वसम्मति से आन्दोलन करने का निर्णय लिया गया। इस विषय में ५ मई को गुरुकुल कालवा में एक विशष बैठक कर आन्दोलन की रूपरेखा बनाकर आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया।

— विस्तत रिपोर्ट अगले अंक में

खेद व्यक्त : पाठकों की सूचनार्थ है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक दिनांक २१ से २७ अप्रैल, २००८ किन्हीं अपरिहार्य कारणों से प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। — ***सम्पादक***

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल द्वारा ''आर्य विचार'' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन

आर्य जगत् को जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा बंगााल द्वारा प्रकाशित द्विभाषि ''हिन्दी'' तथा ''बंगला'' भाषा में आर्य विचार मासिक पत्रिका का चैत्र शुक्ल ९ (रामनवमी) सं. 2065 के दिन आर्य जगत के उच्च वेद विद्वान प्रो. उमाकान्त उपाध्याय के करकमलों से पत्रिका का लोकार्पण हुआ। यह प्रथम अंक है अतः उसमें त्रूटियां स्वाभाविक हैं जिसके निमित्त आपके सुझाव का स्वागत है। पत्रिका का उद्देश्य मात्र वैदिक प्रचार-प्रसार एवं आर्य जगत् के सकारात्मक गतिविधियों को हिन्दी और बंगला भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना है। इस पत्रिका को शीघ्र प्रकाशित करने में सभा मंत्री श्री दीनदयाल गुप्त का उत्साह वर्धक सहयोग तथा सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री जगदीश प्रसाद केडिया के निरंतर सहयोग प्रदान करने के आश्वासन से पत्रिका प्रकाश्सन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस पत्रिका के प्रकाशन में इसके सम्पादक आचार्य योगेश शास्त्री एवं श्री महेन्द्र सिंह आर्य (दिल्ली) का सहयोग सराहनीय है।

सभा प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने उद्बोधन में सर्वप्रथम प्रो. उपाध्याय जी के प्रति आभार प्रकट किया कि वह अपनी चलने में असमर्थता के बावजूद भी पत्रिका के लोकार्पण निमित्त सभाभवन में पधारे तथा अति प्रसन्न्ता एवं भावुक्ता के भाव भरे शब्दों से आशिर्वाद प्रदान किया। जिससे सभा के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा है। सभा प्रधान ने इस अवसर पर सभी को बधाई एवं धन्यवाद देते हुवे कहा कि यह पत्रिका निश्चित रूप से बहुत कम समय में आर्य जगत् के पत्रिकाओं में अपना स्थान ग्रहण करेगा तथा सभी से निवेदन किया कि आर्य जन इसके आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बनकर सभा को सहयोग प्रदान करें। आजीवन सदस्यता शुल्क रु 1200/- तथा वार्षिक शुल्क रु 100/- निश्चित किया गया है।

- आनन्द कुमार आर्य, प्रधान

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ पर अनेक बार इस प्रकार के हमले हुए किन्तु प्रत्येक हमले के पश्चात् यह ग्रन्थ और अधिक जन–मानस तक पहुंचा। इस बार हमें इस मुकदमें का तथ्यप्ररक उत्तर तो देना ही है साथ–ही–साथ हम सबको भी इस ग्रन्थ के पुनः पढ़ने का तथा पढ़ाने का अभियान चलाना होगा।

जो लोग सत्यार्थ प्रकाश के किसी भी ऐतिहासिक घटना को जानते हों, किसी मुकदमें के बारे में परिचित हों, वे अवश्य ही आगे आएं तथा उसकी जानकारियां उपलब्ध कराएं ताकि उनका सहयोग लेकर इस मुकदमे के उत्तर को मजबूत बनाया ता सके। उक्त विचार डॉ० रामप्रकाश जी ने २६–२७ अप्रैल को चली बैठक में प्रस्तुत किए। इससे पूर्व सभा की ओर से उनके पुनः राज्य सभा के सदस्य चुने जाने पर अभिनन्दन भी किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि सब मिलकर सत्यार्थ प्रकाश के प्रकरण में चलें यही मेरा आपकी ओर से सम्मान होगा। सभा की ओर से उनको आश्वासन दिया गया कि वाद का मिलकर उत्तर देने में हमारी ओर से कोई कमी नहीं होगी।

पृष्ठ 2 का शेष

पष्ठ पर लगाया गया है। इस चित्र को दिल्ली सभा की वैबसाईट www.delhisabha.com तथा सार्वदेशिक सभा की वैबसाईट www.aryasabha.com से भी डाउनलोड किया जा सकता है। इसी के साथ "महर्षि" शब्द को भी अनिवार्य रूप से लगाने की भी स्वीकति इस बैठक मे दी गई। प्रत्येक स्थान पर लिखते समय "महर्षि दयानन्द सरस्वती" ही लिखा जाए।

बैठक में योजना के अन्तर्गत कुछ और कार्य शामिल करने की बातें भी आई जैसे – आर्यकुमार सभाओं की स्थापना के लिए अभियान, वैबसाईट के माध्यम से प्रचार कार्य, भजनोपदेशक शिक्षण केन्द्र की स्थापना, वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी की स्थापना, आदि–इत्यादि। सभा अधिकारियों ने योजना को अन्तिम रूप देते समय इन कार्यों को भी जोड़ लेने का आश्वासन दिया। ❑

पृष्ठ 11 का शेष

उन्होंने तुरन्त श्री धर्मपाल आर्य जी को जानकारी दी कि आज सभा कौन–सा केस पैंडिग है। हमें इसकी कोई जानकारी नहीं थी। अतः श्री चावला जी से कहा गया कि आप इसे देख लें और हमें बताएं। श्री रवि चावला जी ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश पर कुछ मुसलमानों ने मुकदमा किया है।

तुरन्त ही सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी से सम्पर्क करके श्री रवि चावला जी को कहा गया कि वे इस केस में पेश हो जाएं तथा नोटिस स्वीकार कर लें। इसके तुरन्त बाद उसी दिन १ मार्च, २००८ को नोटिस स्वीकार कर लिया गया तथा तभी से इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्य किया जा रहा है।

जब यह सब बात ईमेल पर आने लगी ओर सार्वजनिक हो गई तब स्वामी अग्निवेश जागे कि इस मामले से दूर रहना ठीक नहीं होगा। अब लगे घड़ियाली आंसू बहाने और कहने लगे कि नोटिस तो हमें मिला ही नहीं और उल्टा दूसरों को इसका दोषी करार देने लगे। ताकि जवाब न दे पाने का कारण बताया जा सके। स्वामी जी ! आर्यजनता सब जानती है। इतिहास को भी और वर्तमान को भी। केवल राजनीतिक रूप से धरने, प्रदर्शन करने मात्र से आप व्यक्तिगत रूप से मीडिया में खबरें छपवा सकते हैं पर असली निदान के लिए इस मुकदमे का तथ्यपरक उत्तर बनाने के लिए कड़ी मेहतन करनी होगी। जो सड़कों पर नहीं, बन्द कमरों में बैठकर पुराने रिकार्ड को देखकर ही होगी। इसके लिए उन पुराने–पुराने केसों, घटनाक्रमों, आदेशों/ रिकार्डों को निकालना होगा जो सत्यार्थ प्रकाश के केसों तथा इस पर लगी पाबन्दियों से सम्बन्धित हों। नारे लगाने से मुकदमें नहीं लड़े जाते। नारे तो सरकार के विरुद्ध लगाए जाते हैं, कोर्टो के विरुद्ध नहीं। आओ मिलकर समाधान निकालने के प्रयास में लगें न कि सत्यार्थ प्रकाश से अपने राजनैतिक स्वार्थ को साधने के लिए। यही हमारा निवेदन है। ❑

आर्यसमाज भीमनगर गुड़गांव द्वारा ३२वां गायत्री महायज्ञ

५ से १० मई, २००८

यज्ञ : प्रातः ५.४५ से ७.१५ बजे   भजन : पं० योगेश दत्त जी

प्रवचन : डॉ० वागीश शर्मा   भजन-प्रवचनः रात्रि ८.३०–१०.३० बजे

२१ कुण्डीय यज्ञ एवं पूर्णाहुति रविवार ११ मई, २००८

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या मे पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

– अशोक आर्य, प्रधान   *नरेन्द्र आर्य, मन्त्री*

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य**   सह सम्पादक : **विनय आर्य**   व्यवस्थापक : **सुशील महाजन**   सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**